Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 17 अंक 03 30 मार्च 2017 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महिला सशक्तिकरण एक भटकन

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

भारत में महिला सशक्तिकरण विरोधाभास का पिटारा है। समाज की उदासीनता, कथनी और करनी में फर्क तथा सामाजिक प्रतिष्ठा मुख्य कारण हैं। आज भी महिला को अधिकार अंकित मात्र है, धरातल पर नहीं। वैवाहिक विज्ञापनों से पता चलता है कि सामाजिक दोगलापन बेटी को स्कूल जाने से मनाही, बहू पढी-लिखी और कमाऊ चाहिए। बहू के मुंह में जुबान ना हो, कमाने जाए आकर परिवार की सेवा करें, घर के सभी कार्य करे, बच्चों को पढाए लेकिन अपनी कमाई ससुराल वालों के हाथ में देकर पैसे-पैसे की मोहताज रहे। संविधान ने कई संशोधन किए हैं ताकि महिला को अधिकारी सुनिश्चित हो सकें लेकिन पुरुष प्रधान समाज कहां चलने देता है ? पंचायत स्तर पर महिला पंचायत आरक्षित की गई लेकिन वह कोरी अनपढ़ तथा सामाजिक प्रतिबंधों के चलते नाम की सरपंच हैं। वास्तव में उसका पति या ससुर ही कार्य देखता है।

ऐसा भी नहीं है कि महिला अशिक्षित ही है जो पढी लिखी हैं, उन्ही भारतीय महिलाओं ने विश्व को अपनी काबलीयत का लोहा मनवा दिया है। विश्व की महत्वपूर्ण संस्थाओं की प्रमुख कार्यकर्ता भारतीय महिला ही हैं जिनके लिए कोई क्षेत्र अनछुआ नहीं है। विश्व प्रसिद्ध कंपनियों की प्रमुख के साथ-साथ बैंकिंग प्रशासनिक, वैज्ञानिक, सैन्य बल, पायलेट, टीचर हर क्षेत्र में भी भारतीय महिलाओं का बोलबाला है। कल्पना चावला, सुनीता बिलियम तथा हाल ही में एक और नाम जुड़ा है। अब कोई भी पुरूष एकमात्र क्षेत्र नहीं बचा जहां महिला ने अपना परचम ना लहराया हो। अब इसरो की वैज्ञानिक जो 'अग्नी, आर्बिट प्रमुख हैं नामत: अनुराधा टी के, टैसी थामस, मीनाल, कीर्ती फौजदार, एन बालारमथी, सैक्टर तक की भूमिका निभा रही हैं। इतिहास के पन्नों अगर खोलें तो भारतीय महिलाओं की प्रगति कम ना थी।

भारतीय समाज ने महिला को लक्ष्मी, देवी जैसे शबदों से अंलकृत किया है लेकिन घर में पांव की जूती बनाकर रखना भी इसी समाज की देन है। महिला के विरूद्ध अपराध में मुख्य दोषी अक्सर महिला ही निकलती है। समाज का दोगलापन है कि दामाद बेटी को कोई काम नहीं करन देता, सास ससुर को घर से निकाल दिया बहुत नेक लड़का है। वही काम जब बेटा करे तो बहु का गुलाम हैं। समाज की सोच बदलनी पड़ेगी ताकि अर्धागनी वास्तव में भूमिका निभा सके। हमारी मान्यताएं आज भी महिला को दो नंबर की शहरी ही बना कर रख रही है।

भ्रूण हत्या एक अभिशाप है, हर कोई मानता है, लोगों को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की नसीहत देता है। पत्नी की पिटाई होती है, लिंग निर्धारित आज भी चोरी छिपे चल रहा है और महिला भ्रूण की हत्या करवा देता है। लिंग अनुपात में थोड़ा सा सुधार आया है। अब १००० पुरूषों के पीछे ९४५ महिलाएं हो गई हैं। लेकिन महिला को मिली सामाजिक प्रतिष्ठा को पुन: बहाल करने हेतू समाज के ठेकेदारों को सुधार ना होगा। जब लिंग अनुपात में कमी होगी तो समाज का पूरा ताना-बाना ही उलझ जाएगा। हमारे समाज में महिला की प्रतिष्ठा का ज्ञान इसी से लग जाता है कि महिला का नाम पूर्व आता है। सीता-राम, राधे-श्याम, लक्ष्मी-विष्णु। महिला को स्वंयवर करने की प्रथा थी। आज वही महिला का अपहरण होता है। शादी के लिए बाध्य करने के लिए महिला कमाई करने जाए लेकिन किसी पुरूष से बात ना करे। घर से सीधे कार्य स्थल और वहां से सीधे घर। अगर किसी कारणवश दो मिनट की देरी जा जाए तो कुलटा कहलाए और सुसराल पक्ष की धौंस, गाली गलोच और कभी-कभी मारपीट तक की नौबत आ जाती है। क्या यही महिला सशक्तिकरण है। मानव समाज की ४८ प्रतिशत महिला यह सब किस लिए सहने को मजबूर है ? क्योंकि बचपन से ही उसे सिखाया पढाया जाता है -यह तो पराया धन है, यह घर इसका नहीं है। सुसराल में यह तो किसी और घर से आई है तो उसका घर कौन सा है। घर ससुर का या पति का और जब बुढ़ी हो गई तो घर बच्चों का। फिर वह घर किस लिए समारती, संभालती है और पेट काटकर दूसरों की सुख सुविधाओं का ख्याल रखती है और सबके खाने के बाद बचा खाना खाकर संतोष करती है। गर्भावस्था में कुपोषण का शिकार होकर अकाल चलाना भी कर जाती है लेकिन तब कहा जाता है वह तो अपने घर चली गई। क्या वहीं उसका घर है ?

महिला के विरूद्ध होने वाले अपराध को प्राथमिकता से हल करने का प्रावधान है फिर भी ऐसे अपराधों में कमी नहीं आ रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरौ के अनुसार २००५ से २०१४ तक के दशक में ऐसे अपराध दोगुना हो गए। केवल एक दशक में २.२४ करोड़ महिला के विरूद्ध अपराध का रिकार्ड है। हर दो मिनट में एक शिकायत दर्ज हो रही हैं।

वर्ष २००५ में महिला विरूद्ध अपराधों की सं2या १५५५५३ थी जबकि २०१४ में ३३७९२२ हो गई। केवल दहेज उत्पीड़न के ९०७१३ केस इस अवधि में दर्ज हुए। धारा ४९८-ए से जहां महिला को राहत मिली, वही इस धारा का जमकर दुरूपयोग भी हुआ। अक्सर सुसराल पक्ष को डरा धमका कर रखा गया और झूठे मामलों में फंसाया भी गया।

शेष पेज-2 पर

शेष पेज–1

मेरी 37 साल की पुलिस सेवा के दौरान मेरा तजुर्बा रहा है कि महिला ही महिला की दुश्मन है। पुलिस विभाग में दर्ज हर एफ आई आर में प्रथम व द्वि8ीय स्थान पर सास अथवा ननद को ही दोषी पाया गया। ऐसे मामलों में दो पंचायत मेरे पास सिफारिश लेकर आती थी। महिला पक्ष केस दर्ज करवाते व1त वर पक्ष के नाबालिग तक का नाम लिखवा देते थे और दूसरी पंचात उसमें से ननद का नाम निकालने हेतू आती थी जबकि अक्सर तथ्य बताते थे कि घर के वास्तविक क्लेश की जड़ वही होती थी। वर्ष 2015 के रिकार्ड के अनुसार ऐसे अपराधों में 3.1 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई है। पूर्व 337922 के विरूद्ध इस अवधि में 327394 अपराध दर्ज हुए हैं।

रेप केसों में भी 5.7 प्रतिशत की कमी आई है लेकिन आज भी निर्भया कांड हो रहे हैं और राष्ट्रीय महिला विरूद्ध अपराधों में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली 17104 अपराध दर्ज कर सर्वप्रथम स्थान पर है। यहां अपराध प्रति एक लाख आबादी पर 184.3 है। आसाम नंबर दो पर है और तेलंगाना तीन पर है।

राज्य और समस्त देश में महिला सशक्तिकरण का ढोल पीटा जा रहा है लेकिन वर्ष 2015 व यहां तक कि 2016 के महिला विरूद्ध अपराध के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। हरियाणा की बात कहें तो ठीक है कि महिला-पुरूष लिंग अनुपात के आंकड़ों में कुछ सुधार हुआ है लेकिन हाल ही में संपन्न हुए हरियाणा विधान सभा के बजट सत्र मार्च 2017 में एक स6मानित आदरणीय मंत्री व विधायक महिला के बीच महिला दिवस पर हुई नोक-झोंक भी दुर्भाग्यपूर्ण है। जहां तक आंकड़ों की बात है अपराधिक ब्यूरौ के आंकड़ों के अनुसार हरियाणा में वर्ष 2015-16 में 7.5 लाख मौखिक व लिखित शिकायतें मिली लेकिन इनमें केवल 84446 यानि कि केवल 11.3 प्रतिशत शिकायतों पर ही एफ आई आर दर्ज की गई। इस संबंध में हरियाणा प्रदेश नंबर 2 पर है और उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है। इस साल के अंदर 1170 बलात्कार के मुकदमें दर्ज हुए यानि कि बलात्कार के प्रतिदिन लगभग 3 मुकदमें दर्ज हुए और 1886 छेड़छाड़ के मुकदमें दर्ज हुए।

मिलेनियम सिटी गुरूग्राम में ही एक वर्ष में महिला विरूद्ध विभिन्न अपराधों की सख्यां 12170 है। हरियाणा विधान सभा के सत्र के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा पेश किए गए आंकड़ों के अनुसार गत दो वर्ष में 12 से 18 वर्ष की आयु के 3010 बच्चे गायब हुए जिसमें 1785 लड़कियां हैं और 12 से 18 वर्ष के गुमशुदा बच्चों की संख्या 73 प्रतिशत है व 12 वर्ष से कम की सं2या 27 प्रतिशत आंकी गई है। इससे स्पष्ट होता है कि गुमशुदा बच्चों की शोषण के आंकड़े काफी चिंताजनक हैं। चंडीगढ़ जैसे सत्य राज्य में भी 23 प्रतिशत महिलाएं साथी पुरूष की हिंसा का शिकार होती है और 33 प्रतिशत महिलाएं स्कूल से आगे की पढ़ाई नहीं कर पाती। मुस्लिम बाहुल राज्यों में तो स्थिति और भी चिंताजनक है। पाकिस्तान में एक साल में 1442 पुरूषों के मुकाबले 5 हजार महिलाए झूठी शान शौकत की वजह से कत्ल कर दी गई हैं।

यह भी विडंबना है कि राजनीति इतनी तुच्छ है कि हाल ही में उत्तर प्रदेश के एक मंत्री गायत्री प्रजापति अपराधिक केस में पकड़े जाने पर भी सत्तापक्ष के बचाव में चुनाव भी लड़ रहा है और परिवार को डरा-धमका रहा है। अगर हमारी सरकार और पुलिस नहीं चेती तो जन आक्रोश को दबाना मुश्किल हो जाएगा। जब हमारे नेतागण ही अपराधिक घटनाओं में संलिप्त होगें, वे जनता को क्या दशा दिशा दिखा सकते हैं। संसद और विधान सभाओं में काफी गणना में सांसदों और विधायकों पर अपराधिक मामले दर्ज हैं जिनमें हत्या, तस्करी, जबरन कब्जे, भू-माफिया, अपराधियों को आश्रय, बलात्कार इत्यादि हर किस्त के मुकदमें दर्ज हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक आज 369 विधायकों के विरूद्ध महिला अपराध के भिन्न-भिन्न मामले दर्ज हैं। लोकतांत्रिक सुधार संघ की रिपोर्ट के अनुसार बलात्कार के आरोपों का सामना कर रहे अधिकांश उ6मीदवारों को राजनैतिक दलों द्वारा चुनावी टिकट दिए गए जिनमें 6 विधायकों ने चुनाव आयोग के समक्ष शपथ-पत्र देकर स्वंय माना है कि उनके खिलाफ बलात्कार के मुकद्दमें दर्ज हैं और 36 विधायकों ने शपथ-पत्र में स्वीकार किया है कि उनके खिलाफ महिला विरूद्ध दुराचार, यौन शोषण व महिला अत्याचार आदि के मुकद्दमें दर्ज हैं। इसके बावजूद भी इनको विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा अपना उम्मीदवार बनाया गया। पिछले पांच सालों में विभिन्न राजनैतिक दलों द्वारा ऐसे 260 उम्मीदवारों को टिकट दिए गए जिन्होने स्वंय घोषणा की है कि उनके विरूद्ध महिला अपहरण, यौन शोषण, अत्याचार आदि के मामले दर्ज हैं। देश की तीनों सस्थाओं, राज्य स5ाा, लोकसभा तथा विधानसभाओं में सर्वाधिक अपराधियों की लिस्ट में उत्तर प्रदेश व महाराष्ट्र अग्रणीय हैं। इसके विपरीत यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि पिछले लंबे अर्से से केंद्रीय व प्रदेश सरकारों द्वारा राज्यों व केंद्रीय नेतृत्व में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण निर्धारित करने की वकालत की जा रही है। गत केंद्रीय प्रसंग सरकार में तो एक महिला सर्वेसर्वा रही है लेकिन इस दिशा में अभी तक कोई भी कारगर कार्यवाही नहीं की गई है।

आज राष्ट्र के हर हिस्से में प्रतिदिन महिलाओं के विरूद्ध अत्याचार बढ़ रहे हैं और औसतन एक घंटे में तीन महिलाओं से बलात्कार के केस उजागर हो रहे हैं लेकिन नारी सम्मान के रक्षक ही भक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। महिला के विरूद्ध अपराधों में पुलिस तथा न्यायिक प्रणाली की भूमिका भी साफ नहीं है। अगर अपराधियों की उचित धर-पकड़ की जाए और न्यायपालिका जल्द निर्णय दे तो शायद समस्या को कम करने में सहायता मिल सकती है।

महिला विरूद्ध बढ़ते हुए अपराधों की वजह नागरिकों की सुरक्षा हेतू पुलिस की नफरी की कमी भी है। हरियाणा जैसे साधन संपन्न प्रदेश में भी महिला पुलिस कर्मचारियों की सं2या 7 प्रतिशत से भी कम है जबकि राजपत्रित अधिकारी यानि उप पुलिस अधीक्षक व निरीक्षक स्तर के महिला अधिकारियों की नफरी तो 3 प्रतिशत से भी कम है। हिमाचल प्रदेश जैसे छोटे से राज्य में एक या दो महिला पुलिस सशस्त्र वाहिनी है जबकि हरियाणा जैसे प्रांत में जहां महिला विरूद्ध चौंकाने वाले है, कोई महिला पुलिस सशस्त्र वाहिनी नहीं है।

आज हमारी फिल्में और दूरदर्शन भी मार्गदर्शक नहीं बल्कि युवा वर्ग का पथ भ्रष्ट कर रहे हैं। आज सत्य समाज में भी बाप-बेटी

टीवी एक साथ नहीं देख पाते जिन पर सरकारी अंकुश ना के बराबर है। ये कार्यक्रम हमें किस दिशा में ले जा रहे हैं शायद कर्णधारों को स्वंय मालूम नहीं। हमारा फिल्म उद्योग भी किसी से पीछे नहीं, करूणा और ममता की मूर्त नारी, अर्ध नग्न होकर लचर गीतों पर ठुमके लगा रही है। अभिभावक-अध्यापक बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने से पहले अपना आचरण सुधारे ताकि बच्चे उनका अनुसरण कर अपने लिए सही मार्ग चुन सकें।

न्यायपालिका को संवेदनशील होना होगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि जजों की कमी है लेकिन कानून दांव पेंच में उलझने से पहले सुनिश्चित करें कि अपराधी बच ना पाएं और बेकसूर को सजा ना मिले। आज पैसे के बल पर या कानूनी दाव पेंच से कुछ फैसले प्रभावित हो जाते हैं। थोड़ी सर्तकता रहे तथा न्याय में देरी ना हो तो कानून विदों का कथन पूर्ण होगा कि देर से मिला न्याय अन्याय के सम्मान हीं है आज देश के विभिन्न न्यायालयों में लाखों की तादाद में मुकदमें न्याय की बाट जो रहे हैं जिसमें दशक बीत जाते हैं और तारीख पर तारीख चलती रहती है।

पुलिस को भी भूमिका निभानी होगी और जांच निष्पक्ष रूप से कर बेकसूर को बचाना और अपराधी को सजा दिलानी होगी। ग्रामीण पंचायते भी अपराधियों का सामाजिक वहिष्कार कर अपराध पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। राजनीतिज्ञों को निस्वार्थ भावना से अपना चरित्र समाज के समक्ष लाना होगा ताकि जनता उनका अनुसरण कर एक स्वस्थ समाज की रचना कर सके। जेलों में भी मानवीय व्यवहार से व्यक्ति के साथ निपटना होगा। हमें अपराध से नफ्रत होनी चाहिए, अपराधी से नहीं तभी वह समाज का एक इच्छा नागरिक बन सकेगा। ऐसे बहुत से उदाहरण हमारे ग्रंथों में मिले हैं जब पूर्व अपराधी साधू बन समाज सुधारक बने तथा अपराधियों को मुख्य धारा में शामिल करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। हम सबको मिलकर राजनीतिज्ञों को सिखाना होगा कि वे जनहित और जनसेवा के कार्य करें, हम पर राज ना करें। इससे एक स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज स्थापित होगा। अगर हम सब मिलकर कार्य करेगें तो एक स्वस्थ समाज की रचना होगी और भारत भूमि पुनः नमन के काबिल होगी जहां सभी नरनारी मिलजुलकर राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जा सकेगें। आज एक आदर्श एवं चरित्रवान युवा पीढ़ी की आवश्यकता है जो हर महिला की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहे।

आज महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनी तौर पर प्रभावी नीति बनाए जाने की आवश्यकता है जिसमें महिला को पुरूष से जुड़ी किसी वस्तु की बजाए समाज के लिए सकारात्मक योगदान देने वाली के तौर पर देखा जाना चाहिए। जब तक ऐसी नीति नहीं अपनाई जाती, कोई भी सुधार महज बनावटी बनकर ही रहेगा।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

गीता का सार

- राही, जयपुर

खबर पढ़कर हमारी छाती फूल गई कि चीनी मूल के एक लेखक ने व्यावसायिक प्रबंधन और व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता से जोड़कर गीता की प्रासंगिकता पर एक पुस्तक लिखी है। उस लेखक की तरह हमारा भी मानना है कि गीता ऐरा–गैरा ग्रंथ नहीं हैं। गीता ही क्यों, कोई भी महान पुस्तक आदमी को प्रबंधन ही तो सिखाती है।

पिछले दिनों एक मित्र स्वामी रामसुचादास जी पुस्तक साधक संजीवनी हमें भेंट करके गए, बारह–तेरह सौ पृष्ठ के इस ग्रंथ को हमने जहां–तहां ही पढ़ा है। भागती–दौड़ती इस जिन्दगी में हमारे पास महाभारत, रामायण, कुरान शरीफ को बचाने का वक्त कहां है। हमने एक छोटी–सी बात पढ़ी – कर्मफल का आश्रय न लेकर जो कर्म करता है, वही योगी है। अगर इस एक जुमले को आदमी में उतार ले, तो कसम से उसके सारे संताप दूर हो जाएं। पर साहब इन बातों को हम पढ़ते हैं, तो समझते नहीं। समझते हैं, तो गुणते नहीं। गुण लेते है तो जीवन में नहीं उतारते, क्योंकि पढ़ने, समझने और गुणने की फुरसत मिले, तो कुछ पूर्वजों की कहीं बातों पर ध्यान दें। जहां तक प्रबंधन का प्रश्न है, तो हमारा प्रबधंन हमेशा स्त्रियों के हाथ में ही रहा है।

आज भी इस देश में हमारे सरीखे करोड़ों पति हैं, जिन्हें तेल, दाल, भिंडी, बैंगन और टमाटर के बाजार भाव पता नहीं होते। प्याज के भावों की जानकारी सिर्फ इसलिए है कि टीवी समाचार वाले दिन–रात प्याज के भावों का रोना रोते रहते हैं। माना प्याज न हुआ मोटा हीरा हो गया। वैसे अपने देश के गांवों में रहने वाले ग्रामीणजनों को जीवन प्रबंधन का शहरियों से ज्यादा ज्ञान है। इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने गीता को पूरा बांचा है, पर उन्होंने गीता का सार दादियों और नानियों के मुंह से सुना है। पर आजकल वहां भी अराजकता हो गई है। जब से सरकारी ठेके गांव और कस्बों में खुले हैं, वहां सारा प्रबंधन अब पव्वी, अद्धी, बोतल और चपटी नमकीन में घुस गया है। रही–सही कसर टुच्ची राजनीती ने पूरी कर दी। अब तो सिर्फ एक प्रबंधन बचा है, ज्यादा से ज्यादा कमाओ, रिश्तेदारों–पड़ोसियों को नीचा दिखाओ। बेचारा चीनी लेखक। यहां आकर इस प्रबंधन पर भी उसे शोध करना चाहियें।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

– डॉ. भूप सिंह

आज देश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, 'मेक इन इंडिया' और विदेशी इन नारों की गूंज देश के किसी भी कोने में सुनी जा सकती है। मिडिया, सरकार व पार्टी के लोग इन नारों को पूरी शक्ति से गूंजा रहे हैं। तीनों बातें राष्ट्रीय महत्व की हैं, गूंज उठनी भी चाहिये। यहाँ हम फसल बीमा योजना की गूंज सूनने का प्रयास करते हैं।

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि पूरी भाजपा पार्टी व विशेषकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने पब्लिक के सामने भाषण करते समय बार–बार इस बात को दोहराया था कि यदि वे सत्ता में आते हैं तो किसाानों को उनकी लागत में 50 प्रतिशत जोड़ कर फसल का मूल्य दिया जायेगा। (यही स्वामीनाथन रिपोर्ट की सिफारिश है)। सत्ता में आने के बाद स्वाभिमान रिपोर्ट लागू करना तो दूर, राज्य सरकारों द्वारा फसल खरीद के वक्त प्रति किवंटल 100–125 रुपये के बोनस (जो किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य में जोड़कर दिया जाता था) को भी केन्द्र सरकार ने बन्द कर दिया। फसल का उचित मूल्य न देना और थोड़ा बहुत राज्य सरकारों के प्रोत्साहन को बन्द कर देना सरकार का किसानों के प्रति बहुत बड़ा बेरूखी का व्यवहार है। अब 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' की आपरेशनल गाईड लाईन्स से किसान व बीमा कम्पनी से सम्बन्ध रखने वाली कुछ बाते रख रहे हैं जिनको देख कर कोई भी अपनी राय बना लेगा।

किसानों से सम्बन्धित बातें :

1. बीमा की इकाई किसान का खेत न होकर गांव होगा। यदि छोटा गांव है। तो दो–तीन गांव मिलाकर बीमा ईकाई बनाई जायेगी ;च्4द्ध यह शर्त कुछ मुख्य फसलों के लिये हैं। दूसरी फसलों के मामले में यह ईकाई ब्लॉक या तहसील होगी। यह ऐसी बात हुई जैसे किसी मोहल्ले में आग लगने से एक या दो धर पूरी तरह जल जायें और नुकसान का आंकलन मोहल्ले के सभी धरों को हुए नुकसान से आंके।

2. किसान बीमा क्लेम से वंचित रह जायेगा यदि उसके किसी दस्तावेज में कोई कमी पाई जाती है **(P-**14)। यह बहुत सम्भव है कि लाल फीता शाही और दुनियां भर की औपचारिकताओं में कोई न कोई कमी निकल आये।

3. क्लेम राशि निम्न सूत्र अनुसार होगी :–

$$\text{क्लेम} = \frac{\text{औसत उपज} - \text{वास्तविक उपज}}{\text{औसत उपज}} \times \text{बीमात राशि}$$

(P-18)

निश्चित रूप से क्लेम हमेशा बीमित राशि से कम रहेगा।

4. यदि फसल नुकसान औसत फसल उत्पादन से 5 प्रतिशत से कम है तो कोई बीमा क्लेम नहीं मिलेगा **(P-**19)। यह तो सम्भव है कि कुछ खेतों में नुकसान 50 प्रतिशत से उपर हो परन्तु सामान्य तौर पर यदि सारे गांव को ईकाई माना जायेगा तो नुकसान अपवाह रूप को छोड़कर 50 प्रतिशत से नीचे रहेगा और किसान को बीमा लाभ नहीं मिलेगा। अब यह फार्मूला किसानों को बीमा लाभ से वंचित करता है या अधिक से अधिक किसानों को बीमा लाभ देना है यह तो प्रधानमंत्री ही जानें।

5. सरकार द्वारा नुकसान घोषित करने से पहले यदि बीमा किस्त जमा नहीं है तो बीमा लाभ नहीं मिलेगा **(P-**19)।

6. यदि आपदा सामान्य कटाई समय के 15 दिन के अन्दर हो जाती है तो फसल नुकसान का क्लेम नहीं मिलेगा **(P-**19)। अब फसल कटाई का सामान्य समय बहुत सी बातों पर निर्भर करता है। इसको 10–12 दिन आगे–पीछे करना बहुत सरल है और ऐसा करके किसान को बड़ी सरलता से क्लेम से वंचित किया जा सकता है।

7. कम्पनी किसान को क्लेम तभी देगी जब कम्पनी को सरकार से बीमा सब्सिडी मिल जाती है। **(P-**21)।

8. फसल कटने के बाद 14 दिन की अवधि के अन्दर कोई आपदा आ जाने से फसल को नुकसान होता है तो क्लेम दिया जा सकता है। यह 14 दिन का समय निर्धारण भी किसान के कहने से नही होगा (P-23)।

9. आग लगने, युद्ध होने, न्युक्लीयर रियेक्टर, नहर टूटने आदि से होने वाले नुकसान का क्लेम नहीं मिलेगा **(P-**2)।

10. बीमा प्रस्ताव एक समय सीमा तक मान्य होंगे बाद में नहीं। **(P-**54)। जब कर्मचारी किसानों के लिये बीमा अनिवार्य हैं तो इस शर्त का सम्बन्ध किसान से नहीं होना चाहियें।

ये कुछ लिखित बातें है जो किसान को आसानी से क्लेम नहीं लेने देंगी। इसके अतिरिक्त बैंक व बीमा कम्पनी के कर्मचारियों से एक साधारण किसान अपना हक ले पायेंगा यह व्यवहारिक रूप से कोई आसान कार्य नहीं है।

बीमा कम्पनी से सम्बन्धित बातें :–

1. फसल की बिजाई के समय ही कम्पनी को बीमा सब्सिडी दे दी जायेगी। **(P-**3**)**

2. बीमा सब्सिड़ी केन्द्र व राज्य सरकार वहन करेंगी। यदि राज्य सरकार चाहें तो ज्यादा सब्सिडी भी दे सकती है। **(P-7)**।

3. यदि क्लेम बीमित राशि से बढ़ जाता है तो बढ़े क्लेम को सरकार वहन करेगी कम्पनी नहीं। हाँ क्लेम भुगतान कम्पनी के माध्यम से होगा। **(P-8)**।

4. बीमा किस्त बैंक व को–आपरेटिव सोसायटीज इक्कठा करेगी और कम्पनी को देंगी। **(P-11)**।

5. यदि बैंक या सोसाईटी विवरण देने में लेट होती है तो क्लेम देने की जिम्मेवार कम्पनी नहीं होगी। **(P-14)**।

6. कम्पनी का यह अधिकार होगा कि वह सरकार या बैंक द्वारा उपलब्ध करवायें फसल उत्पादन आंकड़ों से सहमत हो या न हों। कम्पनी चाहें तो अपनी सर्वे करवा सकती है। **(P-16)**।

7. सभी प्रकार के उपकरणों व विभिन्न कार्यवाहियों का खर्च सरकार वहन करेगी, कम्पनी नहीं **(P-18)**।

8. फसल नुकसान के आंकड़े भी कम्पनी स्वयं करवा सकती है और वह बैंक व सरकार के आंकडे माने या न माने **(P-19)**।

9. कम्पनी किसानों को भुगतान सब्सिडी मिलने के बाद ही करेगी **(P-21)**।

10. यदि बैंक या सोसाईटी द्वारा इक्ट्ठा किया प्रीमियम कम्पनी को देने में विलम्ब हो जाता है तो कम्पनी बैंक या सोसाईटी से ब्याज लेगी पर क्लेम भुगतान में लेट होने पर कम्पनी कोई ब्याज नहीं देगी। उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि बीमा कम्पनी को किसी तरह का जोखिम नहीं है। कम्पनी को तो लाभ ही होना है हानि का तो प्रश्न ही नहीं है अब आप स्वयं तय करेंगे कि प्रधान मत्री किसके प्रेमी है, किसान या कम्पनी के ?

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के दस्तावेज में यह स्वीकार किया गया कि भारत की 71 प्रतिशत जनसंख्या यानि 90 करोड़ लोग कृषि आधारित धन्धों से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कृषि उत्पादक देश हैं और विश्व में 15 प्रतिशत खाद्य उत्पादों का निर्यात करता है और देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी है। देश के कुल रोजगार में उद्योग का 10 प्रतिशत योगदान है (यह संख्या 15–20 लाख से ज्यादा नहीं है।) और अर्थव्यवस्था में 27 प्रतिशत योगदान है। अब मोदी जी का कृषि प्रेम भी देख लेना चाहियें। 12वीं पंचवर्षीय योजना में कृषि को 1.5 लाख करोड़ बजट दिया गया अर्थात 30 हजार करोड़ प्रति वर्ष। मोदी जी के शासन में वर्ष 2014–15 में कृषि को बजट दिया 24 हजार करोड़ जबकि उद्योग सैक्टर को 5.73 लाख करोड़ की केवल कर छूट दी गई। बड़े उद्योगपतियों द्वारा बैंकों का कई लाख करोड़ रुपये मारे जाने के कारण बैंकों की सेहत सुधारने के लिये 30 हजार करोड़ दिये। 100–125 उद्योगपतियों की चोरी को सम्भालने के लिये 30 हजार करोड़ और 90 करोड़ लोगों की खेती–बाड़ी को 24 हजार करोड़। खाद्य तेलों और खाद्य उत्पादों व दालों को दूसरे देशों से निश्चित मुल्य पर खरीदने का समझौता और यहां के किसानों को उनके उत्पादों के मुल्य पर खरीदने का समझौता और यहां के किसानों को उनके उत्पादों के मुल्य का कोई भरोसा नहीं। वैसे तो मोदी जी से पहले की सरकारें भी किसान प्रेमी रही है और उन सरकारों के किसान प्रेम पर लट्टू होकर लाखों किसानों ने धड़ाधड़ आत्महत्याओं की हैं पर लगता है मोदी जी का किसान प्रेम पिछले रिकार्ड ध्वस्त कर देगा और नया किर्तीमान स्थापित करेगा। धन्य है मोदी जी का किसान प्रेम।

मोदी जी को योजना पेश करने में देश के उच्चतम संस्थान से प्रशिक्षित बुद्धिमान वित्त मंत्री श्री मान अरूण जेटली का भी पूरा योगदान है जिन्होंने सरकार का किसानों को फसल खराब होने पर देने वाले मुआवजा से पीछा छुड़वा दिया और किसानों को पाठ पढ़ा दिया कि भविष्य में मुआवजा के चक्कर में जा पड़े। इसी का नाम तो बुद्धिमानी है जो एक तीर से दो शिकार कर लें। वित्त मंत्री जी भी धन्य हैं

उथल-पुथलकारी युग में - प्रेरक प्रसंग

- मोनिका आर्या,

मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है – जो इस तथ्य को समझते हैं, वे अपने चिन्तन और प्रयास को सदरश्यता के लिए नियोजित करमते हैं। ऐसे लोगों में से किसी को भी पतन पराभाव की यन्त्रणा नहीं सहनी पड़ती । पुरूषार्थी आत्मबल सम्पन्न व्यक्ति कभी भाग्य के भरोसे बैठे नहीं रहते। अतः वे हमेशा अपने चिन्तन और प्रयासों को उत्कृष्टता से जोड़कर अपनी परिस्थितियां स्वयं विनिर्मित करते हैं। भाग्यवादी तो इसी प्रतीक्षा में अवसर गंवाते चले जाते हैं कि उपयुक्त परिस्थियां हो व बिना श्रम–प्रयास के सब अनुकूल होता चला जाये। शास्त्रों में लिखाः–

कलिः शयानों भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिठन्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन्।।

चरैवेति, चरैवेति।

अर्थात् सोते रहना ही कलयुग है, जागरण–उपरान्त जम्हाई लेना द्वापर है, उठ पड़ना ही त्रेता है, उठकर अपने लक्ष्य के लिये गतिशील हो जाना ही सतयुग है। इसलिये लक्ष्य प्राप्ति के लिये चलते रहो, आगे बढ़ते रहो। प्रेरक प्रसंगों से प्रेरणा लेते रहो।

1. सद् भविष्यति (जो होगा देखा जाएगा) की दुगति :

एक तालाब में तीन मछलियां रहती थी। एक का नाम था यद्भविष्य, दूसरी का प्रत्युत्पन्नमति, तीसरी का दूरदर्शी। एक दिन मछुआरे आये व बोले कल यहां जाल डालेंगे – काफी मछलियां हैं। तीनों मडछलियों ने मछुआरों की बात सुन ली। यद्भविष्य बोली – 'यहीं रहने में भला है। कल ये लोग आयें यह आवश्यक नहीं।' दूसरी मछली बोली – 'भला इसी बात में है कि आज रात तक यहां से निकल जायें। वह अवसर पाकर तालाब से जुड़े दूसरे पोखर में चली गई। तीसरी प्रत्युत्पन्नमति बोली – कल जब ये लोग आयेंगे तक परिस्थिति के अनुसार निर्णय लिया जायेगा।' अगले दिन मछुआरे आये। जाल डाला गया। दोनों पकड़ी गइ। प्रत्युत्पन्नमति ने मृतवत् होने का ढ़ोंग रख मृतक समझ मछुआरों ने उसे जाल से निकाल दिया। वह उचककर गहरे पानी में तैरती हुई धारा को पार कर दूसरी ओर चली गई। यद्भविष्य पकड़ी गई व अपनी भाग्य पर अवलम्बन वाली बुद्धि पर रोती रही। इसी प्रकार दूरदर्शी, तुरन्त निर्णय लेने वाले व भविष्य–भाग्य पर विश्वास कर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने वाले तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। वे इस तथ्य की पूरी साक्षी देते हैं कि 'मनुष्य अपने भाग्य का विधाता आप है।' अतः दूरदर्शी बनो।

2. आई लव यू लाइफ

पांच वर्षीय पुत्र अपने पिता के साथ पहली बार पहाड़ों की सैर पर गया था। अचानक गिर जाता है, उसे बहुत चोट लगती है और वह जोर से चिल्लाता है – 'आह इइईईई!' इसके पहले कभी उसे गूंज नहीं सुनी थी। उत्सुकतावश वह पूछता है – 'अरे! तुम कौन हो? उत्तर मिलता है – 'अरे! तुम कौन हो?' विस्मय से भरकर वह चिल्लाता है – 'मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ।' आवाज जवाब देती है – 'मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूं।' वह गुस्सा होकर चीखता है – 'डरपोक कहीं के, सामने आओ, छूपे क्यों हों?' फिर से उसे प्रत्युत्तर मिलता है – 'डरपोक कहीं के, सामने आआ, छूपे क्यों हो?' बेटा

अपने पिता की ओर देखकर पूछता है – 'ये सब क्या हो रहा है पापा?' उसके पिता जी मुस्कुराते हुए धीमे से बोलते है – 'बेटा जरा ध्यान देना।' फिर वो जोर से बोलते हैं – 'तुम बहुत सुन्दर हो।' और आवाज उत्तर देती है – 'तुम बहुत सुन्दर हो।' वे कहते हैं – 'आई लव यू लाइफ' जवाब आता है – 'आई लव यू लाइफ।'

बेटा आश्चर्यचकित होता है परन्तु कुछ समझ नहीं पाता। तब उसके पिता उसे समझाते हैं कि बेटा – 'इसे प्रतिध्वनि कहते हैं और वास्तव में ऐसी ही जिन्दगी है।' जीवन तुम्हें वह सब कुछ वापस करता है जो तुम सोचते, बोलते और करते हो। जीवन हमारे भावों एवं कर्मों का प्रतिबिम्ब है। यह नियम हमारे जीवन के सभी पहलुओं पर लागू होता है। गीत गाओगे तो गीतों की वर्षा हो जाएगी तुम पर। प्रेम देने वाले को प्रेम और घृणा करने वाले को घृणा मिलती है। जीवन हमें वह सब लौटाता है जो हमने उसे दिया है। तुम्हारा जीवन एक संयोग नहीं है, यह तुम्हारा ही एक प्रतिबिम्ब है। यदि इसे बदलना चाहते हो तो खुद को परिवर्तित करो।

3. पाठ से नहीं पुरूषार्थ से गाड़ी चली

एक आदमी हनुमान का उपासक था। एक बार बैलगाड़ी लिये कहीं जा रहा था। गाड़ी कीचड़ में फंस गई। वह वहीं खड़ा होकर हनुमान चालीसा पाठ करने लगा और गाड़ी बाहर निकलने की कामना करने लगा। तभी उधर से आये एक कर्मयोगी पुरूष ने कहा – मित्र! हनुमान जी पता न चलने पर पहाड़ ही उखाड़ लाये थे, तुम कम से कम गाड़ी को हाथ तो लगाओं। आदमी ने थोड़ी ताकत लगाई और बैलगाड़ी बाहर खींच ले गये।

कहने का तात्पर्य स्पष्ट है कि देवता हों या महापुरूष तब तक फल नहीं देते जब तक मनुष्य स्वयं उन आदर्शों के परिपालन के लिये समुद्यत नहीं होता। कर्म विधान पर भी यही सिद्धान्त लागू होता है। ईश्वर उनका फल तब देता है जब मनुष्य अन्तः करण को बलवान बनाये, याचना भाव नहीं, समर्पण भाव बढ़ाये।

लड़कियों में दम–खम एवं अदम्य उत्साह की अनोखी मिशाल प्रीतम सिवाच

– पुरूषोत्तम शर्मा

(गुड़गांव के झाड़सा गांव के साधारण किसान के घर जन्मी प्रीतम में बचपन से ही खेलों में रूचि थी। सातवीं कक्षा की छात्रा के तौर पर उसने हाकी खेलना सीखा और आगे बढ़ी। अर्जुन अवार्डी प्रीतम लड़कियों की आज नई पौध तैयार कर रही है। बिना संसाधन और सरकारी सहयोग के उसने यह बीड़ा उठाया है। महिला हाकी में वह देश को ओलंपिक पदक दिलाना चाहती हैं। अधिक जानकारी के लिये यह रोचक एवं ज्ञानवर्धन लेख।)

अपने लिए तो हर कोई जीता है और तरक्की की राह भी बनाता है, लेकिन कुछ ऐसे बिरले लोग भी होते हैं जो आने वाली पीढ़ी के बारे में सोचते हैं और उनके लिए शिद्दत से काम करते हैं। यह सोच इसलिए ताकि हर कोई उनके जैसा मुकाम पा सके। कुछ ऐसा ही बीड़ा उठाए हुए हैं अर्जुन अवार्डी और भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रही प्रीतम सिवाच ने इस बेटी के जोश और जुनून को सलाम करने की जरूरत है। क्योंकि उसने एक मिसाल कायम कर दी है कि बिना किसी संसाधन के भी हिम्मत से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। एक उबड़–खाबड़ मैदान पर आठ–दस बच्चियों के साथ शुरू हुआ प्रशिक्षण का सिलसिला, आज समाज और प्रशासन की मदद से 150 का आंकड़ा छू रहा है। इनमें भी एक से बढ़कर एक होनहार खिलाड़ी, जो मैदान में अपनी स्टिक से विरोधियों को चारों खाने चित करती हैं।

अर्जुन अवार्डी प्रीतम रेलवे की अधिकारी हैं और साथ ही हॉकी कोच की जिम्मेदारी भी संभाले हुए हैं। प्रीतम ने खुद खेलते हुए 2003 से देश के लिए नयी पौध तैयार करने का भी जिम्मा संभाला हुआ है। उनके कोच बनने की शुरूआत भी अचानक हुई थी। कई साल पहले प्रीतम ने देखा कि एक खाली पार्क में कुछ बेटियां हॉकी खेलने के लिए जद्दोजहद करती हैं। यह देखकर होनहार खिलाड़ी ने उन्हें प्रशिक्षित करने का मन बनाया और फिर शुरू हो गया कारवां। 2004 में विधिवत रूप से उन्होंने लोगों की मदद से यह पार्क हॉकी ग्राउंड के तौर पर पहले दर्जे का विकसित करा लिया। इसके बाद यहां बेटियों को प्रशिक्षित करने का सिलसिला शुरू हुआ और देखते ही देखते इस ग्राउंड से राज्य और राष्ट्र स्तरीय महिला हॉकी खिलाड़ी निकलने लगीं।

प्रीतम का कैरियर प्रोफाइल :

गुरुग्राम जिले के गांव झाड़सा में जन्मी प्रीतम सिवाच ने 1987 में हॉकी स्टिक थामी थी। तब वह सातवीं कक्षा की छात्रा थीं। 1990 में उन्होंने पहली बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता खेली, इसमें उन्हें सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब मिला। उन्होंने 1992 में जूनियर एशिया कप में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में भाग लिया और यहां भी उन्हें सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का अवार्ड मिला। उनके पहले प्रशिक्षक व गुरु स्कूल के पीटीआई तारा चंद थे, जिन्होंने उन्हें हॉकी की बारीकियों से अवगत कराया। वर्ष 1998 में एशियाड में देश की कप्तानी करते हुए बैंकाक में 15 वर्ष बाद प्रतियोगिता का रजत पदक जीता। वर्ष 2002 में मैनचेस्टर इंग्लैंड में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक, 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय महिला हॉकी टीम की प्रशिक्षक की जिम्मेदारी उन्हें दी गयी। चाइना में एशियाई खेल व अर्जेंटीना में हुए विश्व कप में टीम को प्रीतम ने प्रशिक्षण दिया। प्रीतम को खेल में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए 1998 में अर्जुन अवार्ड प्रदान किया गया। यह 15 साल के लंबे अंतराल के बाद किसी महिला खिलाड़ी को अर्जुन पुरस्कार मिला था। पुरुस्कार मिलने से उन्हें और प्रेरणा मिली। अगर जज्बा हो तो उम्र कोई मायने नहीं रखती।

शादी के बाद भी जारी रहा सिलसिला

शादी के बाद वर्ष 2002 में जब उन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों में देश के लिए स्वर्ण जीता उस समय वे एक बच्चे की मां बन चुकी थीं।

इसके बाद वे चोटिल हो गयी और इसी बीच फिर से स्वयं को तैयार करते हुए उन्होंने वर्ष 2008 में ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया, लेकिन उनकी टीम वहां कोई पदक नहीं जीत सकी। प्रीत रेलवे में मुख्य कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्यरत हैं और रेलवे की हॉकी टीम की कोच भी हैं। वहीं, प्रीतम सिवाच के पति कुलदीप सिवाच भी हॉकी की राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं। वे भी स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। फिलहाल चोटिल होने की वजह से वे खेल से दूर हैं। कुलदीप सिवाच भी रेलवे में टीटीई हैं और प्रशिक्षक का दायित्व भी निभाते हैं।

देश को दिलाना चाहती हैं हॉकी में ओलंपिक पदक

हरियाणा की बेटियों ने देश की टीम से लेकर विदेश की ध ारती तक पर अपना कारनामा दिखाया है, लेकिन प्रीतम की जिज्ञासा इतने भर में शांत नहीं हुई। वह चाहती हैं कि देश को महिला हॉकी में किसी तरह से ओलंपिक पदक मिले। इसी सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने सोनीपत के औद्योगिक क्षेत्र में लड़कियों को प्रशिक्षण देना शुरू किया था। मौजूदा समय में इस ग्राउंड पर 140 लड़कियां और 10 लड़के प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इनमें से किरण दहिया, नेहा गोयत, दिव्या सरोहा और श्वेता सैनी भारतीय महिला हॉकी टीम का हिस्सा रह चुकी हैं और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिस्पर्धाओं में इन बेटियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इसके अलावा हाल में तीन बेटियां महिमा चौधरी, ज्योति गुप्ता और रूमावत जूनियर नेशनल टीम का हिस्सा हैं। वहीं, करीब 14 खिलाड़ी हरियाणा टीम में रही हैं और देश के लिए नेशनत स्तर पर स्वर्ण पदक से लेकर दूसरे मैडल जीते हैं। बात खेल तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रीतम से प्रशिक्षित अनेक खिलाड़ी रेलवे और पुलिस सेवाओं में चयनित हो चुकी हैं। 17 महिला खिलाड़ी अब तक अलग–अलग राज्यों या सेवा में सेवारत हैं। बावजूद इसके प्रीतम के मन में कहीं ना कहीं मलाल है कि वह आज तक देश को ओलंपिक दिलाने में कामयाब नहीं हो सकी। जो नर्सरी वह चला रही है, इसमें दो साल से सरकार का कोई सहयोग नहीं है। बल्कि वे अपने स्तर या समाज के जागरूक लोगों की मदद से इस कारवां को आगे बढ़ाए हुए हैं।

आत्मविश्वास

- डॉ विद्या भास्कर वाजपेई

आत्मविश्वास एक साधना है। आत्मविश्वासी कभी हार नहीं मानता, कभी हारता नहीं, वह अपने लक्ष्य पर बढ़ता ही रहता है। वह अपने पुरूषार्थ पर भरोसा रखता है, औरों पर नहीं। वह केवल परमात्मा के विधान के सामने नत होता है। **'शुद्धोससि बुद्धोससि निरंजनोससि।** इस मंत्र का ध्याता होता हे। भगवत् कृपा का सतत आभास होने पर वह सफलता के शिखर पर चढ़ता जाता है। आत्मविश्वास सफलता का प्रतीक है। सफलता को अपने पुरूषार्थ से उपार्जित ने मानकर ईश्वरीस अनुदान मानता है। आत्मविश्वासी मनुष्य सफलता को अपने ही उपयोग में प्रयुक्त नहीं करता, अपितु औरों में भी बांटता है। जिस किसी तरह श्रेय, सफलता, यश, सम्मान पाने की प्रवृति उनमें नहीं होती। आत्मविश्वास ऐसी संजीवनी है जो व्यक्तित्व के तीनों महलूओं चिंतन, चरित्र और व्यवहार को प्रभावित करती है। लक्ष्य के प्रति विश्वास भी विचार भी तरंगों को उसी ओर उन्मुख कर देती है। वह लक्ष्य का चयन कर सफलता पाता है।

आतमविश्वास का विकास अपने विचारों, मान्यताओं के आधार पर होता है। हम जैसे स्वयं को मानेंगे वैसा ही बनते चले जाएंगे। कायरता अथवा प्रखरता में किसका वरण करना है। वरण ही नहीं करता, अपितु उस पर बढ़ता चला जाता है। जिसके पदचिन्ह औरों के लिए पाथेय बन जाते हैं? आत्मशक्ति विकसित करने के लिए हमें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। संदेह से दूर रहना चाहिए। स्वयं को दीन–दुर्बल न समझें। सफलता मिलने पर अहंता तथा असफलता मिलने पर निराश नहीं होना चाहिए। दुर्गुणों से सतर्क, सावधान एवं सजग रहना चाहिए। सदा शिष्ट एवं विनम्र व्यवहार अपनाएं। स्वाध्याय एवं सत्संग के लिए कुछ समय अवश्य निकालें। इन सूत्रों में आत्मविश्वास बढ़ाने, विकसित करने की संभावनाएं छिपी हुई हैं। इन्हें अपनाकर हर कोई आत्मविश्वास की सभी अक्षय, अतूल्य विभूतियों का स्वामी बन सकता है।

जीवन का लक्ष्य

-श्री आनन्द मूर्ति

इस जगत में सब कुछ गतिशील है। कोई चाहे अथवा नहीं, वह चल रहा है। गतिशीलता ही इस जगत का स्वभाव है। इसलिए इसे जगत कहते हैं। प्रत्येक को ही शारीरिक रूप से चलना है और मानसिक रूप से भी। इसीलिए यदि कोई जानता है कि किस तरह चलना है, तब भक्ति का क्षय नहीं होता हे। इसी तरह यह भी जानना आवश्यक है कि सबसे अच्छे तरीके से किस तरह चला जाए। इस अवस्था में मानसिक सम्पतियों को पाने की चेष्टा रहती है। इस अवस्था मेंआत्मा को परमात्मा में रूपांतरित करने की चेष्टा होती है अथवा मानसिक आध्यामिकता ही बोधि का स्तर है। मानसिक संपति का दायरा बहुत विशाल हे, किन्तु यह भी हर दिन नहीं रहता है। मृत्यु के बाद यह भी नहीं रहता है। मानसिक संस्कार जो भौतिक क्षेत्र में व्यक्त नहीं हो पाए हैं, वे आत्मा के साथ बने रहते हैं।

एक विद्वान आज अगले जन्म का एक मूर्ख या अनपढ़ व्यक्ति भी हो सकता है। यहां तक कि वर्तमान जीवन में भी मन इस सम्पति को धारण करके नहीं रख पाता है। सोचो उस विद्वान व्यक्ति के विषय में जो दर्शनशास्त्र में एमए करने के लिए व्याकुल हो गया था और वह किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान में क्लर्क का काम कर रहा है। उसने अपने मन की उपलब्धि को खो दिया। मानसिक स्तर को आध्यात्मिकता यानी बोधि में रूपांतरित करने की चेष्टा मानव जीवन का लक्ष्य है। इस चेष्टा को धर्म कहा जाता है। जब जीवन की गति उलटकर अपनी मूल दशा अर्थात चेतना में आती है तो गति वहां भी रहती है, किन्तु अभिव्यकित नहीं। मनुष्य की सभी सम्भावनाओं और व्यक्तियों का सम्पूर्ण उपयोग होना चाहिए। स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म से कारण और कारण से कार्य की परिधि से ऊपर की ओर गति ही प्रगति है। यदि तुम इस पथ पर चलोगे तो यह पथ तुम्हें तुम्हारे अंतिम लक्ष्य तक पहुंचा देगा। यही परमपिता का अधिष्ठान है। एक दिन सभी को ईश्वर के आश्रम में आना ही पड़ेगा, जितनी जल्द इसे कर लिया जाए उतना ही अच्छा है।

जाटों में बढ़ता शराब का प्रचलन – एक विचारणीय प्रश्न?

– महीपाल आर्य

जो डूबे हैं गिलासों में न उभरे जिंदगानी में।
हजारों मर गये इस बंद बोतल के पानी में।
ना जिंदगी कर बर्बाद ओ बोतल के दीवाने।
जो बोयेगा जवानी में वो काटेगा बुढ़ापे में।

पाठकगण,

शक्ति का सदुपयोग कहां और किस प्रकार बन पड़े यह आज का अदूरदर्शी मनुष्य भूल गया है। पतन–पराभाव के बहते प्रभाव में गिरते–पड़ते उन सभी को देखा जा सकता है, जोकि अतिबुद्धिमान व समझदारों की श्रेणी में गिने जाते हैं। नासमझी की उठी विश्वव्यापी लहर के रूप में शराब के बढ़ते कुप्रचलन में आज जितनी शक्ति व समय नष्ट हो रहा है, उसका अवमूल्यन छोटी बुद्धि से नहीं हो सकता।

मानव अपने जीवन को बनाने बिगाड़ने और कलंकित करने का स्वामी है। परंतु दूसरों को दुःख देने अथवा समाज को कलंकित करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। शराब का सेवन करना भी एक ऐसा ही कलंक है जिसका दुष्परिणाम मानव की सीमा को पार कर सामाजिक व्यवस्था में अशांति और अवनति के बीज बोता है। अतः हमारे धर्मशास्त्र इसे निन्द्य और अभक्ष्य मानते हैं। मनु महाराज लिखते हैं–

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।
तस्माद ब्राह्मणराजन्यौ वैश्यश्च न सुरा पिबेत्।। 11/93

सुरा (शराब) अन्न का मल है। मल (टट्टी) को पाप कहते हैं। मल मूत्र अभक्ष्य पदार्थ हैं, खाने पीने की वस्तु नहीं हैं। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि कभी भी और किसी भी अवस्था में शराब का सेवन न करें, क्योंकि मल को शूकर (सूअर) आदि पशु ही खाते हैं। मनुष्य नहीं खाते। महर्षि बाल्मीकि ने मद्यपान की बुराई करते हुए कहा है– पानादर्थश्च धर्मश्च कामश्च परिहीयते अर्थात मद्य पीने से अर्थ, धर्म और काम तीनों नष्ट हो जाते हैं। दीर्घनिकाय का वचन है कि मदिरा तत्काल धन की हानि करती है, कलह को बढ़ाती है, रोगों का घर है, अपयश की जननी है, लज्जा का नाश करती है और बुद्धि को दुर्बल बनाती है। मुंशी प्रेमचंद जी लिखते हैं कि जहां सौ में से अस्सी आदमी भूखे मरते हों वहां दारू पीना गरीबों का रक्त पीने के बराबर है। महादेवी वर्मा जी लिखती हैं– मदिरा का उपभोग तो स्वयं को भुलाने के लिये है, स्मरण करने के लिये नहीं। भगवती प्रसाद जी का कथन है कि शराब भी क्षय जैसा एक रोग है। जिसका दामन पकड़ती है, उसे समाप्त करके ही छोड़ती है। अकबर इलाहाबादी कहते हैं कि इस अंगूर की बेटी ने (अर्थात शराब) ने इतने जुल्म ढाये हैं शुक्र है कि उसका बेटा न था–

उसकी बेटी ने उठा रखी है दुनिया सर पर।
खैरियत गुजरी कि अंगूर के बेटा न हुआ।

पाठकवृन्द!

इतिहास साक्षी है कि जिसने इसका सेवन किया उसे मिटना पड़ा है। मैं जब नियंत्रित व असंतुलित अपने जातीय लोगों को नशे में धुत देखता हूं तो पीड़ा होती है। संभवतः उन्हें नहीं मालूम कि उनके राज्य का सर्वनाश इसी सुरा ने किया था। हमारे इस आर्यवर्त देश में पहले कोई मद्य मांस का सेवन नहीं करता था। यहां का आहार–विहार–आचार–विचार शुद्ध था। सारी पृथ्वी के मानव विद्या और चरित्र की शिक्षा लेने के लिये इस आर्यवर्त देश में आते थे। अंग्रेजों की कुसंगति से हमने शराब, चाय, काफी, बीड़ी, सिगरेट तथा मांस भक्षण आदि दुर्व्यसन सीखे। हम पराधीनतावश दास और मूर्ख हो गये। दास का स्वभाव होता है कि वह अपने स्वामी व दूसरों का अंधानुकरण करता है। सैकड़ों वर्षों की गुलामी का यह फल है कि हमने दूध, दही व खाने की जगह शराब को अपना लिया। राजा अश्वपति की घोषणा स्पष्ट संकेत करती है कि –

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः
नानाहिताग्निर्नाविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर, लोभी, दुर्व्यसनी और शराब पीने वाला नहीं है। और न कोई ऐसा व्यक्ति है जो दैनिक यज्ञ न करता हो, तथा कोई मूर्ख और व्यभिचारी पुरुष नहीं है, पुनः दुराचारिणी स्त्रियां कैसे हो सकती हैं।

पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे हुए कुछ लोग हमारे ऋषि, मुनियों के चरित्र पर लांछन लगाते हैं कि वे शराब पीते थे। मैं उनसे पूछना चाहता हूं यदि वे शराब के व्यसनी होते तो यह देश विश्व शिरोमणी और स्वर्णिम कैसे कहला सकता था? ऐसे लोग जो हमारे पूर्वजों पर लीपापोती करते हैं प्रतीत होता है कि वे स्वयं भ्रष्ट हैं तथा अपनी भ्रष्टता को उच्च सिद्ध करने के लिये ऋषि मुनियों को अपनी श्रेणी में गिन रहे हैं ताकि उनका पक्ष सुदृढ़ हो सके। हमारे ऋषि मुनि तो समस्त विश्व को चरित्र की शिक्षा देने वाले हैं। आहार–विहार, आचार–विचार के शिक्षक हैं। फिर उन पर ऐसा निर्लज्ज लांछन असहय है।

महाभारत से एक सहस्त्र वर्ष पूर्व हमारा देश सारे संसार के शिरोमणि देशों में था। हमारी परस्पर की फूट तथा मद्य आदि के सेवन से कैसे सर्वनाश हुआ, इसका दिग्दर्शन इस लेख के माध्यम से पाठकगण को कराना हमारा ध्येय है।

यह तो प्रायः सभी लोग जानते हैं कि शर+आब – शराब, शरारत का पानी है। शराब पीने से बुद्धि नष्ट होती है। शराब अंदर ओर अक्ल बाहर 'बुद्धि लुम्पति यद द्रव्यं मदकारि तदुच्यते' इसमें सभी एक मत हैं। हृदय, मस्तिष्क और मन शराब से ये सभी दुर्बल हो जाते हैं। मुख निस्तेज, कांतिहीन हो जाता है, शरीर रोगों का घर और मन कुकर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। शराबी मनुष्य आलसी, निरूत्साही, कामी और क्रोधी हो जाता है। शराब ब्रह्मचर्य का नाश करके आयु तथा बल को क्षीण करके मनुष्य को मृत्यु के मुख में गिराती है। यह मानव को चोर, जार, जुवारी, कायर, क्रूर, पापी और मांसाहारी बना देती है। दुनिया का कौनसा पाप है जो पीने वाले से नहीं करवाती। अतः शराब हेय है, त्याज्य है।

इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि इस आर्यावर्त देश के सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं था। किन्तु यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक बढ़ जाता है तब आलस्य, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है तथा देश में विद्या–सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुर्व्यसन बढ़ जाते हैं। जैसे कि मद्य, मांस सेवन, व्यभिचार, बाल–वृद्ध विवाह, उच्छृंखलता, स्वेच्छाचार आदि दोष बढ़ जाते हैं। महाभारत के समय में कुरूकुल में जुआ और यदुकुल में मद्य का सेवन बढ़ गया और श्रीकृष्ण जैसे योगी महापुरुष की भी उपेक्षा होने लगी। विनाश काले विपरीत बुद्धि। जब नाश के दिन आते हैं तब उल्टी बुद्धि होकर उल्टे काम करते हैं। यही कारण था कि कुरूकुल और यदुवंशियों का सर्वनाश हो गया।

महाभारत युद्ध के बाद वृष्णिवंशियों में जो कलह हुआ उसका मुख्य कारण मद्यपान ही था। यदुवंशियों के राजकुमार इतने निर्लज्ज हो गए थे कि कृष्ण का भय व लज्जा जाती रही। कृतवर्मा, बलराम, सात्यकि और बभ्रु जैसे शूरवीर भी मद्य पीने लगे। परिणामतः जिस दुर्दांत क्षत्रिय योगीराज श्रीकृष्ण के बुद्धिबल ने महाभारत के युद्ध में सैंकड़ों रणमुण्डों के बीच नाचती हुई विजयश्री को अपनी दासी बनाया था। जिसके संकेत मात्र से दिशाएं कांपती थी। जिसके बुद्धि शौर्य ने असंख्य कौरवदल को यमराज का राही बनाया था। लेकिन इतिहास के वे काले पृष्ठ भी बड़े कठोर हैं जो लिखते हैं कि श्रीकृष्ण का यदुवंश शराब का शिकार होकर परस्पर लड़ पड़ा और श्रीकृष्ण अपनी असफलता को देखकर वन में चले गये। वहां किसी व्याध के बाण से उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

इतिहास साक्षी है कि सुरा और सुंदरी के पाश में फंसकर अरब, तुर्क, मुगल, मराठे, राजपूत और जाट आदि राज्यों व वंशों का सर्वनाश हुआ। जब हम पराजय के कारणों पर चिंतन–मनन करेंगे तो उसमें मुख्य कारण आपस की फूट तो है ही लेकिन स्वाधीनता छीनवाने में सुरा का भी अहम स्थान है। शराब और व्यभिचार ने हिन्दू राजाओं और प्रजा को खोखला कर दिया था। आज भी कोणार्क, खजुराहो, पुरी, चित्तौड़ तथा उदयपुर के मंदिरों के अश्लील नंगी मूर्तियां जनता के चरित्र के अधःपतन की साक्षी हैं। वे मूर्तियां उस समय के व्यभिचार का नंगा नाच हैं। परिणामतः विदेशी आक्रमणकारियों का यहां शासन स्थापित हो गया।

पाठकगण!

कौन नहीं जानता तत्कालीन हिन्दू राजाओं को जब मुहम्मद बिना कासिम, मुहम्मद गजनबी और मुहम्मद गौरी ने आक्रमण किये तो वे हिन्दू राजा सुरा और सुंदरी के चक्कर में अपनी स्वाधीनता छिनवा बैठे। कौन नहीं जानता खिलजी वंश के बादशाह अलाउद्दीन को जिसका नाश भी शराब और सुंदरी ने किया। उसने शराब के नशे में अपने पुत्र और पुत्रवधू को कैद में डलवा दिया। ऐसी अवस्था में चित्तौड़ और देवगिरी आदि में हिन्दू राजाओं ने पुनः स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और तुर्की सेना को अपने राज्य से बाहर खदेड़ दिया। लेकिन यह स्वतंत्रता अधिक दिनों तक नहीं टिक पाई। हिन्दू राजा शराब के नशे में चूर धराशायी कर दिये गए। मुगल राज्य का संस्थापक बाबर दिल्ली और आगरा के तख्त का स्वामी बन गया। लेकिन वाह री शराब! तूने उसे भी नहीं छोड़ा।

फतेहपुर सीकरी में जब राणा सांगा के तीरों ने उसके नाक में दम कर दिया तब खुदा को प्रसन्न करने के लिये उसने शराब की बोतलें ओर मूल्यवान प्याले तोड़ दिये। बाबर के इस कुकृत्य से उसका पुत्र हुमांयू भी न बच सका। वह भी शराब का शिकार हो गया। अकबर जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के पीछे तो मुगल वंशजों के चरित्र इतने निर्बल हो गए थे कि जिनके बाप–दादा ने तलवार से दिल्ली और आगरा पर विजयश्री प्राप्त की थी, वे रात–दिन वेश्याओं के साथ मद्यपान और विलासिता में डूब गये। मुहम्मद रंगीला और जहांदारशाह के समान मुगल बादशाह पैदा हो गये जो युद्धभूमि में भी सुनहले हौदों पर बैठकर जाते थे। पूरे हरम को (बेगमों की फौज) को साथ रखते थे। और रात–दिन खेमों में सुरा और सुंदरी का विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। वाह री शराब। तूने उन मुगल बादशाहों के तख्त को कठपुतली का खेल बना दिया। किसी राजकुमार का कान पकड़कर गद्दी पर बैठा दिया, किसी का दामन पकड़कर गद्दी से उतार जेल में डाल दिया अथवा मौत के घाट उतार दिया। शराबियों की संतान मुगल बादशाहों के राजकुमारों के साथ यह विचित्र खेल सुरा और सुंदरियों ने खूब खेला।

ज्ब नादिरशाह जैसे जुलेटरा, गडरिया आया तो दिल्ली के तख्त का स्वामी बादशाह मुहम्मदशाह रंगीला तब शराब पीकर, जनाने कपड़े पहनकर महलों में नाच रहा था। नादिरशाह ने दिल्ली को लूट लिया। कत्ले आम किया और स्वयं दिल्ली के सिंहासन पर बैठ गया। मुगल बादशाह रंगीला को अपने पैरों के नीचे बैठाकर ठोकरें मारता हुआ उसके सामने ही सारी बेगमों को नंगा करके आभूषण छीनकर उनको अपने सैनिकों में बांट दिया। इस प्रकार जिन मुगलों का सारे भारतवर्ष पर एक छत्र राज्य था उनका नामों निशान मिट गया। उनके बेटे और पोते आज दिल्ली में कबूतर उड़ाते हैं। सुरा और सुंदरी की इस करामात को देखकर किसी ने ठीक ही लिखा–

ऐ शराब (इश्क) तूने अक्सर कौमों को खाके छोड़ा।
जिस घर से सिर उठाया उसको मिटा के छोड़ा।
राजाओं के राज्य छिने, शाहों के ताज छीने।
गर्दनकशों को अक्सर नीचा दिखा के छोड़ा।

पाठकगण!

कौन नहीं जानता महाराणा प्रताप को जिसके धैर्य वीर शौर्य को देखकर भारत का बच्चा–बच्चा खुशी से झूम उठता है। राजस्थान का कण–कण उसकी अनोखी वीरता से रंगा हुआ है। किन्तु वाह री जहरीली शराब, तूने उसको भी नहीं छोड़ा। उसका बेटा अमर सिंह सुरा और सुंदरी के जाल में फंसकर अपनी विजय धरोहर को लुटा बैठा।

मुगल काल के अंतिम दिनों में जब मराठा साम्राज्य का अभ्युदय हुआ, वह तब तक खूब फला–फूला जब तक कि सुरा और सुंदरी के चक्र में नहीं पड़ा। ज्यों ही शराब का स्पर्श उसके सरदारों तथा अन्य प्रतिष्ठित जनों ने किया, त्यों ही यह राज्य भी पतन की ओर जाना प्रारंभ हो गया।

इतिहासकार लिखते हैं कि साधारण परिवार में जन्म लेकर मुगलों से लोहा लेने वाले वीर शिवाजी मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए आंसू भरकर कह रहे हैं कि मेरे सेनापतियों। मेरे बेटे शम्भा को राजा मत

बनाना क्योंकि वह व्यसनी है, शराब का आदी है, जो मेरे करे कराये पर पानी फेर देगा। बात भी यही हुई, शिवाजी की मृत्यु के बाद सेनापतियों ने शिवाजी के कनिष्ठ पुत्र राजाराम को सिंहासन पर बैठाने का निश्चय किया। लेकिन वे एक भूल कर गये, उन्होंने सेनापति हमीरराव मोहिते को मंत्रणा में सम्मिलित नहीं किया। इस प्रकार आपसी फूट में वह शराबी, व्यभिचारी शम्भा राजा बन बैठा। उसने अपने भाई राजाराम को कैद में डाल दिया। और तो और उसने अपनी सौतेली मां (मौसी) को भी जीवित ही दीवार में चिनवाकर मार डाला। इतना ही नहीं उसने वृद्ध पेशवा को कारागार में झौंक दिया। शिवाजी के बूढ़े सचिव को बंदी बनाकर मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार पिशाच लीला होती रही और अंत में शम्भा जी सुरा और सुंदरी के जाल में इतना जकड़ा गया कि उसकी सारी स्वाभाविक वीरता विलासिता के सागर में डूब गई।

औरंगजेब ऐसे अवसर की खोज में था। अतः उसने विशाल सेना लेकर चढ़ाई कर दी। बहादुर शिवाजी की वह व्यसनी संतान उस समय भी पापी कुलेश के मायाजाल में फंसा हुआ संगमेश्वर के महलों में शराब के नशे में धुत, चूर, सुंदरियों के साथ कामलता के क्रियात्मक पाठ पढ़ रहा था। इस प्रकार मदिरा और मोहिनी के सेवन से थका हुआ शम्भा जी जब जोगी का बाणा (वेशभूषा) पहनकर भाग जाना चाहता था तो शेख निजामी (जो औरंगजेब का भेजा गया सेनापति था) उस द्वारा बंदी बना लिया गया। शम्भा व कवि कुलेश को ऊंटों पर बैठाकर बाजारों में घुमाते हुए बादशाह औरंगजेब के सामने ले जाया गया। औरंगजेब ने उसे कैद में डाल दूत द्वारा संदेश भेजा कि यदि वह आधीनता स्वीकार करे और मुसलमान बन जाये तो उसके प्राण बच सकते हैं। बंदी दशा में वीर शिवा के पुत्र शम्भा का जो अपमान हुआ उस अपमान ने आत्मसम्मान को भड़का दिया। उसने कडत्री भाषा में उत्तर दिया कि मैं इस प्रस्ताव पर तब विचार कर सकता हूं जब पहले मुझे बादशाह की लड़की मिल जाए। कवि कुलेश ने भी इस्लाम व पैगम्बरों को भला–बुरा कहा। इस बात को सुनकर औरंगजेब के हृदय में प्रतिशोधा की आग लग गई। उसके कहने पर कुलेश की जीभ काट ली गई तथा शम्भा जी की आंखें निकाल ली गई। औरंगजेब इतने दण्ड से भी संतुष्ट नहीं हुआ, उसने उनके शरीर का एक–एक अंग कटवाकर तुलापुर गांव के कुत्तों के सामने खाने के लिए फेंकवा दिया। शम्भा जी व कुलेश के केवल सिर रखवा लिए गए और उन्हें दक्षिण के बाजारों में डंके की चोट के साथ घुमाया गया। इस प्रकार वीर शिवाजी द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य शराब की बदौलत शम्भा द्वारा मिटा दिया गया।

न जाने कितने राजा, महाराजाओं, नवाबों का सर्वनाश शराब द्वारा किया गया। लेख विस्तारभय से सभी का जिक्र नहीं किया जा सकता। मराठों, जाटों, राजपूतों, यादवों आदि वंशों का सर्वनाश शराब से हुआ। इसका जीता जागता प्रमाण इतिहास के पृष्ठों में दर्ज है। जिस प्रकार मुगल बादशाह जहांदारशाह और छत्रपति शिवाजी का पुत्र शम्भा शराब के व्यसनी थे, उसी प्रकार राजपूत राजाओं में महाराजा रतन सिंह जैसे राजा सुरा और सुंदरी के चक्कर में फंसे हुए थे, जो राज्य के नाश का कारण बने। जब राजा रतन सिंह शराब पीकर वेश्याओं का नाच देख रहा था, एक गोसांई ने उसका कत्ल कर डाला। इस प्रकार न जाने कितने राजपूत राजा शराब के नशे में भोग विलासिता में डूबे हुए नष्ट हो गए। राठौरों का नाश भी इस शराब रूपी नागिन से हुआ। जोधपुर का महाराजा अजीत सिंह अपने पुत्र द्वारा मारा गया। इसका कारण भी शराब बना। महाराजा अजीत सिंह का पुत्र–वधू के साथ अनुचित अवैध संबंध हो गया था। अतः इस अपमान से लज्जित होकर बखत सिंह ने एक रात को जब उसका पिता अजीत सिंह शराब के नशे में बेहोश था, पुत्र द्वारा मार दिया गया।

इस तरह सारे भारतवर्ष में सुरा देवी ने शनैः शनैः पैर फैलाने प्रारंभ कर दिए। जो जाति व साम्राज्य सिर ऊंचा उठाता दिखाई देता, शराब अपने विषैले, तीखों किन्तु सुंदर बाणों से सर्वनाश करने के लिये वहीं जा पहुंचती। तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ, सभ्य तथा उच्च कुलीन जाट जाति के उत्कर्ष को भला फिर यह शराब कैसे सहन कर सकती थी। जाटों के कुल को कलंकित करने वाले कुछ तत्वों की कृपा से मदिरा ने अपना रुख भरतपुर की ओर किया तथा शनैः शनैः अपने हथकण्डे दिखाने प्रारंभ कर दिये।

भरतपुर राज्य के कर्ता, धर्ता जाट क्षत्रिय रहे हैं। इसी प्रकार अनेक रियासतों के राजा जाट क्षत्रिय अपनी आन, बान, शान के लिये जाने जाते रहे हैं। पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति लिखते हैं कि– "तब से जाटों का कोई इतिहास मिलता है, तबसे वे भारतवर्ष में ही रहते हैं, यदि कहीं भारत से बाहर उनका नाम–निशान पाया जाता है, तो उनका मूल स्थान भारत में ही मिलेगा। उनकी सबसे प्रथम ऐतिहासिक चर्चा भारत पर अरबों के आक्रमण के साथ आरंभ होती है। जाट लोग फारिस की सीमाओं तक फैले हुए थे। अरब के निवासी उस समय भारतवासियों में से जाटों को ही जानते थे। इसी कारण वे सभी भारतवासियों को जट, जाट नाम से पुकारते थे। वे एक प्रकार से उससे पूर्व बढ़ते हुए भारतीय आधिपत्य की सफरमैना पलटन अर्थात अग्रगामी सेना के सैनिक थे। अपनी वीरता, साहसिकता और धार्मिक उदारता के कारण वे आगे बढ़ने के योग्य भी थे। जब भारत पर मुसलमान टूटे तब उन्हें सीमा–प्रांत के जाटों से कदम–कदम पर टक्कर लेनी पड़ी।" जाटों में ऊंच–नीच का कोई भेद नहीं था और वे राज्यों के विरुद्ध विद्रोही रहा करते थे।

सदियां गुजर गई और कई राज्य भारत की रंगस्थली पर अपना अभिनय करके चले गये। परंतु जाटों की कुछ विशिष्टतायें अब भी शेष हैं। आज भी वे सामाजिक दृष्टि से अन्य हिंदुओं की अपेक्षा अधिक स्वच्छंद हैं और आज भी अल्हड़पन से युक्त वीरता तथा भोलेपन से मिश्रित उद्दण्डता उनके भीतर विद्यमान है। उन्हें प्रेम से वश में लाना जितना सरल है, आंखें दिखाकर दबाना उतना ही कठिन है। सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से वे अन्य हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक स्वाधीन हैं और सदा स्वाधीन रहे हैं। अन्याय के खिलाफ लड़ना उनका पेशा है। मनमानी करने में और अपनी बात की आन की खातिर अपना घर बिगाड़ना जाटों में विशेषतया देखा जाता है। ऐसी जाति पर औरंगजेब की धर्मांधता पूर्ण नीति ने बिजली का सा प्रभाव डाला। मथुरा और आगरा के आस–पास के जाटों पर औरंगजेब के अत्याचारों ने विशेष प्रभाव डाला। वैसे तो जाटों की टक्कर इससे पूर्व भी मुस्लिम बादशाहों के साथ होती रही है। सुलतान महमूद गजनवी जब सोमनाथ को

लूटकर उसका संपूर्ण धन–ऐश्वर्य ले वापिस जा रहा था जब जाटों ने उसके काफिले के पिछले भाग को लूट लिया। स्यालकोट के पास बाबर की जाटों से टक्कर हुई। जो लोग बाबर से मिलने आ रहे थे, उन्हें जाटों ने सबक सिखाया और लूट लिया। तैमूर का भी इन अक्खड़ सैनिकों से पाला पड़ा था। वे औरंगजेब को कैसे सहन करते। गोकुला जाट के झण्डे के नीचे 20 हजार जाटों ने लड़ाई लड़ते हुए विजय हासिल की। परंतु अंत में तोपखाने और हथियारों का मुकाबला जाट लोग कब तक करते। अन्तः गोकुला को आगरे की को तनाली के सामने लाया गया तथा भय और लालच से मुसलमान बनने को विवश किया गया किन्तु वह धर्मबीर, रणबांकुरा कहां झुकने वाला था, तदनन्तर बंदा वीर वैरागी के समान गोकुला का एक–एक अंग काटकर जनता को विद्रोह से डराने का यत्न किया। इस अत्याचार से जाट कब डरने वाले थे। जाटों ने मथुरा और आगरा के फौजदारों को चैन से बैठने नहीं दिया। सिनसिनी गांव के राजा राम जाट ने सौगर गांव के रामचेहरा जमींदार की सहायता से हथियारबंद सेना का गठन करके आगरे के शासक साफी खां की नाक में दम कर दिया। सिकंदर के मकबरे पर चढ़ाई करके जाटों ने खूब लूटा, पीटा और राजाराम ने मुगल सम्राट अकबर की कब्र खुदवा कर उसकी हड्डियों को जलवाया और अपने भाई गोकुला का बदला लिया। मुगल सम्राट औरंगजेब के लिये इससे बढ़कर अपमान जनक और कौन सी बात हो सकती थी कि वह अपने पुरूषाओं की समाधियों (मकबरों) तक की रक्षा न कर सका। इसका बदला लेने हेतु औरंगजेब ने बहुत बड़ी सेना आजम वेदारबख्त तथा सेनापतियों को भेजा। राजाराम के नेतृत्व में जाटों का घमासान युद्ध हुआ लेकिन गोली लगने से जाट नेता राजाराम की मृत्यु हो गई। उसके बाद राजाराम के बूढ़े पिता भज्जा सिंह ने नेतृत्व संभाला। उधर आमेर नरेश मान सिंह के पुत्र राजा विशन सिंह कछवाहे के जाटों के दलन का कार्य सौंपा गया। "घर का भेदी लंका ढावे" वाली कहावत अनुसार जाटों के अनेक दुर्ग छीन लिये गये ओर कुछ वर्ष के लिये वे तलवार छोड़कर हल चलाने लगे। 1695 ई. में पुनः राजाराम के छोटे भाई चूड़ामन ने नेतृत्व संभाला। वह लड़ाकू था तथा राजनीतिज्ञ भी था। उसकी वीरता और नीतिमत्ता ने भरतपुर राज्य की स्थापना कर दी। यह जाटों का शिवाजी था। इसने न जाने कितनी लड़ाईयां औरंगजेब के सेनाध्यक्षों से लड़ी। औरंगजेब उसका कुछ न बिगाड़ सका। उसने औरंगजेब के बेटे पोतों तक को लूटा, पीटा किंतु जब दुर्दिन आते हैं तो बना बनाया सारा काम बिगड़ जाता है। जिस चूड़ामन का औरंगजेब तथा उसके बड़े–बड़े सेनापति आमेर का राजा बिशन सिंह तक बाल भी बांका न कर सके, वही चूड़ामन घर की फूट के कारण, शराब की लत में पड़े पुत्र मुहकम सिंह के हठी स्वभाव के कारण विष खाकर इस संसार से सदा के लिये चल बसे। परस्पर की फूट से शत्रु की जीत हुई। बदन सिंह ने जयपुर नरेश की सहायता से डीग में अपना राज्य स्थापित किया। चूड़ामन का पुत्र भागकर जोधपुर चला गया। महाराजा बदन सिंह राजा हो गये। उनकी मृत्यु के बाद इनके पुत्र सूरजमल जो 22 वर्ष के थे, भरतपुर राज्य के स्वामी बने। उन्होंने भरतपुर राज्य का बड़ा विस्तार किया। मथुरा, आगरा आदि सभी नगर उनके अधिकार में आ गये। भरतपुर महाराजा सूरजमल का राज्य यमुना के दोनों तटों पर ग्वालियर से लेकर दिल्ली तक फैल गया। भरतपुर राज्य, जाति, धन संपदा बल एवं प्रताप आदि वैभव से परिपूर्ण था। महाराजा सूरजमल की शूरवीरता से प्रभावित होकर उस समय का प्रसिद्ध फ्रांसीसी तोपची समरू अवध नवाब की नौकरी छोड़कर अपनी सेना तथा तोपों सहित जाट महाराजा की सेवा में आ गया था। महाराजा सूरजमल ने फर्रूखनगर, रेवाड़ी और बहादुरगढ़ आदि स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया था और उसने दिल्ली राजधानी में अपने को फौजदार (सेनापति) के नाम से घोषित किये जाने के लिये प्रस्ताव किया। मुस्लिम बादशाह ने जब महारानी किशोरी का डोला मांगा तो महाराजा सूरजमल का खून खौल उठा। महाराजा सूरजमल ने ससैन्य दिल्ली पर चढ़ाई कर दी और अपनी सेना के डेरे शाहदरा में डाल दिये। जो घमासान युद्ध हुआ उसका विस्तृत वर्णन हमने 'जाट ज्योति' के किसी पूर्व अंक में किया है। महाराजा सूरजमल मुगलों के छलबल से वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी अटल कीर्ति यावत चन्द्र सूर्य बनी रहेगी। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुन नाहर सिंह ने उसी समय दिल्ली पर चढ़ाई की परंतु विजयश्री प्राप्त न हुई। वे भरतपुर लौट आये। तत्पश्चात उनके पुत्र जवाहर सिंह सिंहासन पर बैठे।

महाराजा जवाहर सिंह स्वभाव से उग्र और हठी थे। उन्होंने पिता का बदला लेने के लिये बहुत बड़ी सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी और दिल्ली को खूब जी भर कर लूटा, पीटा तथा स्मारक रूप में लाल किले का अष्टधाती फाटक (किवाड़) भरतपुर ले गये, जो आज भी भरतपुर दुर्ग के उत्तरीय फाटक पर लगे हैं। मल्हारराव के धोखा देने के कारण संधि हो गई। दिल्ली से धन–धान्य लूटकर ब्राह्मणों द्वारा राजगद्दी के अशुभ होने की बात मानकर वे भरतपुर लौट आये। महाराजा जवाहर सिंह ने यद्यपि अपने पिता के राज्य का विस्तार ही किया किन्तु जयपुर राज्य से युद्ध होने के कारण दोनों राज्यों की बड़ी हानि हुई। जयपुर के राजा माधो सिंह की तो युद्ध समाप्ति के पांचवे दिन मृत्यु हो गई तथा महाराजा जवाहर सिंह 1767 ई. में एक मेव द्वारा धोखे से मार दिये गये। इसमें भी शराब एक कारण रहा। जवाहर सिंह की कोई संतान नहीं थी। अतः उनका भाई रतन सिंह राजगद्दी पर बैठे।

महाराजा रतन सिंह अति रसिक वृति के थे। इनको नाच–रंग और शिकार का अधिक व्यसन था। होली के दिनों में शराब में मस्त दोमण गुलाल बनवाकर अत्यधिक दिनों तक नाच–रंग में डूबा रहता था। मानों जहां इनके पूर्वजों ने रण–रंग में बारूद के धुएं से बादल काले किये थे वहां यह रंगरलियों में गुलाल उड़ाकर लाल बादल करके रंग बदल रहा था। यद्यपि रतन सिंह वीर भावना का था किन्तु कुसंग के कारण शराब का व्यसनी होने के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। सुरा और सुंदरी के चक्र में आकर उसने भरतपुर राज्य कसे रसातल की ओर चालू कर दिया। जिस प्रकार मुगल बादशाह जहांदारशाह और छत्रपति शिवाजी का पुत्र शम्भा थे, उसी प्रकार महाराजा रतन सिंह सुरा और सुंदरी के चक्र में फंसा हुआ अपने तथा भरतपुर राज्य के नाश का कारण बना। वह 9 मास के बाद वृंदावन जैसे तीर्थ में शराब पीकर जब वेश्याओं का नाच देख रहा था, वहां एक गोसांई ने उसका कत्ल कर दिया। इसके बाद भरतपुर राज्य में गृह कलह आरंभ हो गया।

तदनन्तर दो वर्ष की आयु का राजकुमार केहर सिंह गद्दी पर बैठा। उधर नवल सिंह और रणजीत सिंह दोनों भाईयों में परस्पर युद्ध प्रारंभ हो गया। भरतपुर राज्य उन्नति के स्थान पर अवनति को प्राप्त हो गया। यदि महाराजा शराबी व्यभिचारी न होता तो क्यों तो वह गोसांई द्वारा मारा जाता और क्यों उसका दो वर्षीय राजकुमार गद्दी पर बैठता। व्यभिचारी की संतान होने से चेचक निकलने से वह भी शीघ्र मर गया। नवल सिंह और रणजीत सिंह के घरेलू युद्ध ने कोष खाली कर दिया और दुर्बलता आ गई। फिर अंग्रेजों के साथ महाराजा रणजीत सिंह के चार–पांच युद्ध हुए, जिससे भरतपुर राज्य का सारा वैभव समाप्त हो गया। अंत में उसे विवश होकर अंग्रेजों के साथ संधि करनी पड़ी। सूरजमल और जवाहर सिंह के समान कोई प्रतापी राजा न होने से यह राज्य एक शराबी और व्यभिचारी राजा रतन सिंह के कारण विदेशियों का दास बनकर रह गया। आज चूड़ामन और महाराजा सूरजमल के वंश का केवल नाम ही शेष है। न वीरता रही और न ही वह विशाल वैभवशाली राज्य। विलासिता ने बड़े–बड़े वंशों और साम्राज्यों को मिट्टी में मिला दिया। अतः जाट भाईयों! चेतो। अपने पूर्वजों से सीख लेते हुए शराब से किनारा कर लो।

राजस्थान के राजपूत क्षत्रियों में चितौड़ के महाराणाओं का सिसोदिया वंश सर्वोत्तम माना जाता है। इनमें बापा रावल, महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप सिंह, महारामणा राज सिंह, महाराणा सज्जन सिंह और महाराणा फतह सिंह अच्छे राजा माने जाते हैं। ये ऊंचे चरित्र के तथा वीर योद्धा थे। अंततः उनके कुल का नाश भी शराब के कारण हुआ। महाराणा शम्भू सिंह और सज्जन सिंह अंतिम दिनों में मदिरा पीने के व्यसनी बन गए, विषय विलासी होने से भरी जवानी में ही वे इस संसार से चल बसे। शराब ने इस प्रकार आर्य जाति के सूर्य को अस्त कर दिया। राजपूतों के बाद राठौड़ भी देखा–देखी शराब और सुंदरी से प्रेम करने लगे। यही प्रेम अंत में उनके विनाश का कारण बना। इसी प्रकार सिक्खों के राज्य भी शराब की प्याली में डूब गये। जिसका विस्तृत वर्णन पुस्तक का विषय है।

आर्य जाति के भद्र पुरुषों! तुम्हारे देखते–देखते तुम्हारी संतान आज शराब की व्यसनी होती जा रही है। व्यभियान आदि कुकर्मों से धरती को नरक बनाया जा रहा है। संभल जाओ, अपनी संतानों को संभाल लो। पंचायतों के माध्यम से, प्रचार के माध्यम से गांव दर गांव सामाजिक बुराईयों को दूर करने का बीड़ा उठाओ अन्यथा वह दिन दूर नहीं आपका नाम लेना भी नहीं होगा। शराब से कर लो किनारा, वरना जीवन है अंधियारा।

लघु कथा

आपके तीन मित्र हैं, तीसरे की कदर करनी जरूरी

– रामकुमार आत्रेय

एक व्यक्ति था, उसके तीन मित्र थे। एक मित्र ऐसा था, जो सदैव साथ देता था। एक पल, एक क्षण भी बिछड़ता नहीं था। दूसरा मित्र ऐसा था, जो सुबह शाम मिलता। तीसरा मित्र ऐसा था, जो बहुत दिनों में जब तब मिलता। एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि उस व्यक्ति को किसी कार्यवश अदालत में जाना था और किसी को गवाह बनाकर साथ ले जाना था। अब वह व्यक्ति सबसे पहले अपने उस मित्र के पास गया, जो सदैव उसका साथ देता था और बोला– 'मित्र क्या तुम मेरे साथ अदालत में गवाह बनकर चल सकते हो?'

वह मित्र बोला– 'माफ करो दोस्त, मुझे तो आज फुर्सत ही नहीं। उस व्यक्ति ने सोचा कि यह मित्र मेरा हमेशा साथ देता था। आज मुसीबत के समय पर इसने मुझे इनकार कर दिया।

अब दूसरे मित्र की मुझे क्या आशा है फिर भी हिम्मत रखकर दूसरे मित्र के पास गया, जो सुबह–शाम मिलता था और अपनी समस्या सुनाई।

दूसरे मित्र ने कहा– 'मेरी एक शर्त है कि मैं सिर्फ अदालत के दरवाजे तक जाऊंगा, अंदर तक नहीं।'

वह बोला– 'बाहर के लिए तो मैं ही बहुत हूं, मुझे तो अंदर के लिए गवाह चाहिए।'

फिर वह थक–हारकर अपने तीसरे मित्र के पास गया, जो बहुत दिनों में मिलता था और अपनी समस्या सुनाई। तीसरा मित्र उसकी समस्या सुनकर तुरंत उसके साथ चल दिया।

अब आप सोच रहे होंगे कि वे तीन मित्र कौन हैं? तो हम आपसे बताते हैं कि इस कथा का सार–

जैसे हमने तीन मित्रों की बात सुनी वैसी हर व्यक्ति के तीन मित्र होते हैं। सबसे पहला मित्र है हमारा अपना 'शरीर', हम जहां भी जाएंगे, शरीर रूपी पहला मित्र हमारे साथ चलता है।

एक पल, एक क्षण भी हमसे दूर नहीं होता।

दूसरा मित्र है, शरीर के 'संबंधी' जैसे माता–पिता, भाई–बहन, मामा–चाचा इत्यादि जिनके साथ हम रहते हैं, जो सुबह शाम मिलते हैं।

तीसरा मित्र है, हमारे 'कर्म' जो सदा ही साथ आते हैं।

अब आप सोचिए कि आत्मा जब शरीर छोड़कर धर्मराज की अदालत में जाती है, उस समय शरीर रूपी पहला मित्र एक कदम भी आगे चलकर साथ नहीं देता।

जैसे उस पहले मित्र ने साथ नहीं दिया। दूसरा मित्र यानी संबंधी श्मशान घाट तक यानी अदालत के दरवाजे तक 'राम नाम सत्य है' कहते हुए जाते हैं। तीसरा मित्र आपके कर्म हैं, जो हमेशा साथ जाते हैं, चाहे अच्छे हों या बुरे।

अगर हमारे कर्म सदा हमारे साथ चलते हैं, तो हमें अपने कर्म पर ध्यान देना होगा, अगर हम अच्छे कर्म करेंगे, तो किसी भी अदालत में जाने की जरूरत नहीं होगी। धर्मराज भी हमारे लिए स्वर्ग का दरवाजा खोल देंगे, इसलिए हमें भगवान का आश्रय लेकर अपने कर्म करते रहना है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 24-07-1979) 37.5/5'5" B.Com (Hons), CS, TGDBAMBL, working as CS in a Company at Chdnaigarh. Avoid Gotra : Garhwal, Jakhar, Ola. Cont. 9464741686
- SM4 Jat Girl (DOB 24-07-1979) 37.5/5'5" B.Com (Hons), CS, TGDBAMBL, working as CS in a Company at Chdnaigarh. Avoid Gotra : Garhwal, Jakhar. Cont. 9464741686
- SM 4 Jat Girl (DOB 23.12.91) 25.9/5'4" B.Com, MBA, HR Employed as P.O in ICICI Bank, Pune. Avoid Gotra : Bijarnia, Jakhar. Cont. 9023093808
- SM 4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.5/5'5" B.Com, MIS, MBA Economic 2nd year. Avoid Gotra : Panghal, Baloda, Bhaghajra. Cont. 9463967847, 9463969302
- SM 4 Jat Girl (DOB 31.10.87) 29.5/5'1" B.Tech, CSE, MBA, IT, HR, Employed in MNC Company at Noida with Rupees 7.5 Lacks package P.A. Avoid Gotra : Pannu, Dahiya, Bura. Cont. 9914678273
- SM 4 Jat Girl (DOB 17.07.92) 24.8/5'4.6" M.Tech, Computer Science, Employed in MNC at Gurgaon. Avoid Gotra : Dhull, Redhu, Sinhmar. Cont. 9896969566
- SM 4 Jat Girl (DOB 19.03.89) 28/5'4" MBBS. Preparing for PG. Avoid Gotra : Mor, Malik, Nain. Cont. 9465522934
- SM4 Jat Girl (DOB1988) 28/5'2" M.A. (Economics) Hons., Pursuing Ph.D . NET cleared. Employed as Assistant Professor in Chandigarh. Father retired Class-II officer from Haryana Government. Brother settled in USA. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana. Cont.: 09988224040
- SM4 Jat Girl (DOB 20.08.86)30.6/5'3" BAMS, MHA. Studying and coaching for IAS in Delhi.Father SDO retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Girl (DOB19.07.90) 26.7/5'4" M.A. Sanskrit, B.Ed. P.Phil from P.U. Chandigarh. Pursuing from P.U. Chandigarh. CTET, NET, HTET cleared. Avoid Gotras: Duhan, Kundu, Sehrawat. Cont.: 09416620245
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 26.6/5'4.5" MSc from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer in MNC Phase-I Chandigarh) Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 25/5'4" MSc Physics from P.U. Chandigarh. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 13.07.90) 26.6/5'9" M.A. Economics, B.Lib. Employed as Librarian. Avoid Gotras: Hooda, Malik, Khatri. Cont.: 09417529417
- SM4 Jat Girl (DOB 12.02.91) 25.11/5'3.5" B. Tech. from K.U.K. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 08591364586
- SM4 Jat Girl (DOB 12.08.92) 24.5/5'6" B.A, JBT. Avoid Gotras: Mor, Chahal, Rathee. Cont.: 09416688653, 09467772156
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 27.2/5'3" 10+2, GNM. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 23. 04. 91) 25.8/5'3" + Chartered Accountant Employed as Associate Consultant in Infoysis Company, I.T Park Chandigarh with Rs. 7 lakh P.A. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Mann, Hooda, Rathee. Cont.: 09815005193, 9888774788
- SM4 Jat Girl (DOB1991) 25/5'1" B.Com., MBA, Doing B.Ed. Father, Grandfather retired from Govt. job, Mother Lecturr in Govt. School. Rural/Urban property. Avoid Gotras: Malik, Lohan. Cont.: 09416850371, 09416203233
- SM4 Jat Girl 26/5'2" B.E. Working as Manager in Bank of India in Chandigarh. Father in I.A.F., Mother housewife. One brother. Avoid Gotras: Chauhan, Dhaka. Cont.: 07696566024
- SM4 Jat Girl (DOB 07.12.89) 27/5'6" B.D.S. Working in a reputed Private Dental Hospital. Avoid Gotras: Balyan, Mann. Cont.: 09466367107, 09467994607
- SM4 Jat Girl (DOB 26.07.88) 28.4/5'4" M.A. (Geography) B.Ed, M.Tech, (Geoinformatic). Employed as Project Assistant (Adhoc) in Science & Tech. Deptt. Panchkula. Father in Central Govt. job. Avoid Gotras: Dalal, Dahiya, Panwar. Cont.: 09416534644
- SM4 Jat Girl (DOB 19.02.89) 27.10/5'2" M.A. M.Phil, Pursuing Ph.D (Sociology) from P.U. Chandigarh, UGC, NET qualified Working as Lecturer in Post Graduate Govt. College for Girls, Sector 42, Chandigarh from last three years. Martch preferred Chandigarh, Panchkula, Mohali. Avoid Gotras: Narwal, Pannu, Ahlawat. Cont.: 09416862660, 09729577161
- SM4 Jat Girl (DOB Sep.1991) 25.2/5'4" M.A. Psychology from P.U. Chandigarh. HTET cleared. Employed as Assistant Professor on contract basis. Avoid Gotras: Khokhar, Malik, Mor. Cont.: 09876221778
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.83) 33.4/5'5" M.A. (Eng.). MBA, B.Ed. Working in HR NOIDA. Grand Daughter of Sir Chhotu Ram. Avoid Gotras: Ohlian, Bajad, Dagar, (Ahlawat not direct). Cont.: 09896399003
- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90) 26/5'2" B.A. B.Ed. from Chandigarh. Father Govt. Officer in HSIDC. Avoid Gotras: Hooda, Kundu, Bhanwala. Cont.: 09729235545, E.mail: hooda1962@gmail.com
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.88) 28.11/5'3" M.Tech Employed as Guest Lecturer in Govt. Polytechnic College Nilokheri. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl (DOB 17.02.90) 26.10/5'3" M.Tech Employed as Programmer in Food & Supply Department Karnal. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl 25/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.84) 32.2/5'3" M.Com. Passed Computer Course. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.B.A. Employed in MNC at Mumbai with Rs. 4.50 lakh package P.A. Father, Mother in Govt. Job. Avoid Gotras: Mor, Nain, Gill. Cont.: 09872330397, 09915711451
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 28.4/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl 27.5/5'7" BA (Hons), M.A. (Eng.) M.Phil, B.Ed. NET quqlified. Employed as JBT Teacher in UT Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar. Cont.: 09467394303
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 25.3/5'6" M.Tech (CSE). Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991, 0172-2277177
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Cleared SSC Exam. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl (DOB 05.12.86) 30/5'5" M.Sc. Geology Employed as Class-I Gazzeted Officer at G.S.I. Govt. of India at Dehradun. Fathr School Lecturer, Mother Housewife. Avoid Gotras: Kundu, Rathee, Malik. Cont.: 08950092430
- SM4 widow issue-less Jat Girl (DOB 02.10.80) 36.2/5'3" M.Sc., M.Phil, B.Ed., Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 08570032764
- SM 4 Jat Boy (DOB 10.10.90) 26.5/5'8" B.Com, CA, working in a Private reputed company, family settled at Panchkula. Avoid Gotra : Dhalor, Beniwal, Pachar. Cont. 9915577587
- SM 4 Jat Boy 30/5'10" B.Tech (PEC), MBA Finance from France, DHA level three cleared. Employed in MNC, Mumbai with good package, family settled at Panchkula. Avoid Gotra : Mor, Gahlawat, Rathi. Cont. 8360609162
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O.

retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274

- SM4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai, Package Rs. 10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188, 09560022263, 09416504181
- SM4 Jat Boy 30/6' B.Tech. from P.E.C. Chandigarh. Employed in Jindal Steel Ltd. with Package Rs. 8.5 lakh P.A. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Dhariwal, Lather, Basati. Cont.: 09592383356
- SM4 Jat Boy 25/5'8" B.Tech from PEC Chandigarh Employed as Inspector in Custom & Central Excise (C.G.S.Bombay) Avoid Gotras: Poonia, Lohan, Rathee. Cont.: 08950492573
- SM4 Jat Boy (DOB 04.12.90) 26/6' B.Tech Employed in Pb. & Sind Bank as P.O. at Jalandhar. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Brar, Beniwal. Cont.: 09467037995, 09416048202
- SM4 Jat Boy (DOB 15.04.91) 25.8/5'9" M.A. Employed as Clerk in SBI Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Saroha. Cont.: 08813089176, 09138530000
- SM4 Jat Boy (DOB 23.08.89) 27.4/5'10" B.Tech. Employed as Service Engineer in Tata Motor Ltd. In Haryana. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM4 Jat Boy (DOB 25.11.87) 29./5'9" 10+2, Employed as Data Operator in UT Chandigarh on contract basis. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Kadian. Cont.: 09463457433
- SM4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 26.8/5'9" B.Tech. Employed as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father & Mother Gazzeted Officer in Haryana Govt. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha. Cont.: 09988701460
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B.A. LLB Practicising in District Court Panchkula. Avoid Gotras: Balyan, Nehra, Cont.: 09996844340
- SM4 Jat Boy 28/5'10 B.A. PGDCA from P.U. Chandigarh. Employed in Punjab Coop. Bank as Regular D.E.O Father in Haryana Govt., Own Flat at Panchkula. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bazar. Cont.: 09876875845
- Pratibha Man, 23.11.1989/5'2"/B.Sc. Biotechnology, M.Sc, Biotechnology, PHD Biotechnology, Chandigarh, Gold Medalist, Neet, Gate, DBT, H-TET, Gotra : Man, Malik, Bainiwal, Address: 466/22, Durga Colony, Near Old Jail Road, Rohtak, M.: 9068949430, 9811205415
- दिल्ली, दिसंबर 1990 / 5′ 2.5′′, बीएससी बीएड, एमएससी (मैथ) प्राईवेट टीचर, पिता एयरफोर्स, माता गृहिणी, दो छोटी बहनें, वरीयता–सरकारी / प्राईवेट नौकरी, गोत्र ढाका, डागर, जाखड़, 8400804158
- झज्जर, 22 / 5′5′′ बीई (डीसीई, डीयू), एसो. कंसलटैंट (12 लाख भारत, 6500 डॉलर यूएसए मासिक) भाई क्लास–2 ऑफिसर–नेवी, पिता किसान, माता गृहिणी, वरीयता – बीटेक / एमबीए / सरकारी नौकरी, गौत्र – गाजला, ठाकरान (दहिया, धनखड़ सीधा) 9671597070, 9671596633
- पानीपत, 27 / 5′8′′, एमए (अंग्रेजी) प्रीपेरिंग नेट, आई.बी. कॉलेज पानीपत में कार्यरत, पिता रिटा. माता गृहिणी, भाई सॉटवेयर इंजीनियर (एमएनसी), वरीयता– नौकरी / बिजनेस, गोत्र– दलाल, जाग्लान, गुलिया, 9896474774
- बहादुरगढ़, 26 / 5′2′′, एमए (ईको), एमएड, पिता सरकारी नौकरी, माता प्राईवेट टीचर, एक छोटा भाई–एक्साइज इंस्पेक्टर, वरीयता– सरकारी नौकरी, गोत्र– छिकारा, दलाल, जून, 9253166161

वधु चाहिए

- सोनीपत, 30 / 5′8′′, बीई (आईटी), सेल्स ऑफिसर एचडीएफसी बैंक सोनीपत (2 लाख वार्षिक), पिता सरकारी, केंद्र सरकार, माता गृहिणी, गोत्र– अंतिल, मलिक, अहलावत, 9350997898
- झज्जर / हरियाणा, 29 / 5′6′′, बीए, 6 महीने से मर्चेंट नेवी (2.5 लाख वार्षिक), भाई क्लास–2 ऑफिसर (मर्चेंट नेवी), बहन इंजीनियर, पिता किसान, माता गृहिणी, वरीयता– कोई डिमांड नहीं, गोत्र– काजला, ठाकरान (दहिया, धनखड–सीधा नहीं), 9671597070, 9671596633
- बहादुरगढ़, 1988 / 6′, बीए, सब–इंस्पेक्टर दिल्ली पुलिस, सीजीएल, एपीयरिंग, पिता दिल्ली पुलिस, माता गृहिणी, एक भाई कार्यरत, वरीयता– सरकारी नौकरी दिल्ली, गोत्र– दलाल, रावत, काजला, 9355163863
- फरीदाबाद, 29 / 5′4′′, एमसीए (एमडीयू) मैनेजर–आईटी नोएडा (6 लाख वार्षिक) फरीदाबाद में अपना मकान व अन्य प्रॉपर्टी, एक भाई एक बहन शादीशुदा, वरीयता– एमसीए / कार्यरत / कद 5′2′′+, सरोहा, पंघाल
- हरियाणा / दिल्ली, जनवरी 1989 / 5′8′′, बीएससी चीफ ऑफिसर मर्चेंट नेवी – करीब 3 लाख मासिक, पिता एएसआई–दिल्ली पुलिस, माता शिक्षित गृहिणी, छोटा भाई एमबीए शिक्षारत, वरीयता – 5′4′′ / सुंदर / सुशील, गोत्र– फलस्वाल, खत्री, मलिक, 9810901872
- SM4 Jat boy, सितंबर 1989 / 5′11′′, एमबीबीएस, जेआर डीडीयू हास्पिटल (90 हजार मासिक), माता–पिता व्यवसाय, भाई इंजीनियर, भाभी डाक्टर, दिल्ली में अपना हास्पिटल, वरीयता– एमबीबीएस / एमडी, गोत्र–मलिक, नांदल, सांगवान, 8527390668, 8527390670
- मई 1989 / 5′10′′, बीटेक (मैकेनिकल इंजीनियरिंग), एमबीए (मार्केटिंग), आफिसर–मर्चेंट नेवी, पिता चीफ इंजीनियर, माता गृहिणी, बहन अविवाहित, वरीयता– मासिक आय 1 लाख से ऊपर, गोत्र–राठी, मलिक, नारा, 9813045153
- सोनीपत / रेवाड़ी, अगस्त 1989 / 6′1′′, बीटेक, एमएस (लोरिडा (यूएसए), कार्यरत FIAT CHRYSLER चेन्नई (10.25 लाख वार्षिक), पिता रिटा.–हरियाणा सरकार, माता सरकारी नौक्री, तीन भाई–दो कार्यरत, एक शिक्षारत, वरीयता–बीटेक / एमटेक / कार्यरत, गोत्र– दहिया, बांगड़, खटकड़, 9466795477
- फरीदाबाद, नवंबर 1988 / 5′9′′, बीटेक (आईटी), कार्यरत एमएनसी गुड़गांव (7.5 लाख पैकेज), पिता मैनेजर, माता गृहिणी, बड़ी बहन शादीशुदा, वरीयता– समकक्ष / सुंदर / शिक्षित, गोत्र–राठी, मान, मलिक, 9818220018
- रोहतक / हरियाणा, अगस्त 1985 / 5′10′′, बीए, 2 वर्षीय इलेक्ट्रीशियन कोर्स (आईटीआई), प्रधान–जन जागृति एज्यू. सोसाइटी (40 हजार मासिक), माता–पिता टीचर रिटा., बड़ा भाई विवाहित, वरीयता– सुंदर / सुशील / गृहिणी, गोत्र– हुड्डा, गुलिया, राणा, 9416879107, 9991086705
- रोहतक / यूएसए, 29 / 6′, बीटेक–कम्प्यूटर इंजीनियर, कार्यरत यूएसए कंपनी–बोस्टन, 1+ लाख यूएस डालर वार्षिक, पिता रीयल एस्टेट एजेंट, माता एसो. प्रोफेसर–सरकारी यूनि., बहन विवाहित–यूएसए, वरीयता– कम्प्यू. इंजी. / कार्यरत यूएसए, गोत्र– मान, कुहाड़, राठी 9996005044, 9996001986

- गुड़गांव / सोनीपत, फरवरी 1984 / 5'11'', बीएससी, पायलट कोर्स (यूएसए, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड), कैप्टेन–इंडिगो एयरलाइंस, 8 लाख मासिक, अपना मकान, पिता रिटा. हरियाणा रोडवेज, बहन टीचर दिल्ली (विवाहित), वरीयता– असि. प्रोफेसर / डाक्टर / कालेज लेक्चरर, गोत्र– मलिक, सांगवान, खत्री, 9466945722
- दिल्ली, 27 / 5'7'', बीसीए, कार्यरत प्राईवेट कंपनी गुड़गांव (4 वर्षों से, 40 हजार मासिक), इकलौता लड़का, दिल्ली व एनसीआर में अपनी प्रोपर्टी, रिहायस दिल्ली, वरीयता– स्नातक / कार्यरत / कोर्सकम्पलीट / दिल्ली / हरियाणा / राजस्थान, गोत्र– छिकारा, खत्री, दलाल, 9250665617
- बहादुरगढ़, जुलाई 1987 / 6'2'', बीएससी, स्क्वाड्रन लीडर (इंडियन एयरफोर्स), पायलट दिल्ली, माता रिटा. सरकारी विभाग, भाई–भाभी कार्यरत, बहन शादीशुदा, वरीयता– पीजी (साइंस, इंगलिश, मैथ) कद 5'6'' / सुंदर, गोत्र– खत्री, दलाल, जटराणा, 8901452089
- बहादुरगढ़, 26 / 5'2'', एमए (ईको), एमएड, पिता सरकारी नौकरी, माता प्राईवेट टीचर, एक छोटा भाई–एक्साइज इंस्पेक्टर, गोत्र– सरकारी नौकरी, गोत्र– छिकारा, दलाल, जून, 9253166161, 9466279797
- रोहतक, 1988 / 5'8'', कान्वेंट शिक्षित, एमए, एमफिल (अंग्रेजी), बीएड, सीटेट, पीएचडी शिक्षारत, पिता पूर्व चेयरमैन–भूमि विकास बैंक, माता मुख्य अध्यापिका, भाई मेजर (आर्मी), वरीयता–प्रोफेसर / लेक्चरर / गजेटिड आफिसर, गोत्र–कादियान, सहरावत, नारा, 9416055814
- बहादुरगढ़, अक्टूबर 1989 / 5'3'', बीटेक, एमटेक, एमसीए शिक्षारत, स्थायी टीजीटी–केंद्रीय विद्यालय दिल्ली (6 लाख वार्षिक), पिता व भाई टीचर, माता गृहिणी, कृषि भूमि व प्लाट, संपन्न परिवार, वरीयता– टीचर / लेक्चरर / बैंक पीओ / समकक्ष, गोत्र– दलाल, पूनिया, गुलिया, 9466054810, 9466168678
- रोहतक, सितंबर 1988 / 5'1'', बीडीएस, एमडीएस (ईडो, फाईनल वर्ष), 8 लाख वार्षिक, पिता राजकीय सेवा में, माता गृहिणी, भाई व्यवसाय, वरीयता, डाक्टर / क्लास–1 आफिसर, गोत्र– खोखर, डॉगी, मलिक, 9416211908
- हरियाणा, अगस्त 1982 / 5'2'', एमफिल, बीएड, लेक्चरर–स्कूल कैडर, तलाकशुदा (एक लड़की – 6 वर्ष), गोत्र– दलाल, मलिक, दहिया 7206729852
- बहादुरगढ़ / 25 / 5'4'', मांगलिक, बीडीएस, लेक्चरर–बीडीएस कालेज, पिता व भाई का दिल्ली में अपना बिजनेस, गोत्र– धनखड़, राठी, दहिया, 9718317938
- हरियाणा / दिल्ली, 26 / 5'6'', बीटेक, सुंदर, एमएनसी कार्यरत (7. 5 लाख वार्षिक), पिता–एयरफोर्स, माता गृहिणी, भाई बीई शिक्षारत, गोत्र– मलिक, दहिया, 09972738152
- दिल्ली, जनवरी 1986 / 5'3'', बीए (डीयू), एमबीए, एमएनसी कार्यरत गुड़गांव, वरीयता– कार्यरत / शिक्षित, गोत्र– मलिक, दहिया, अहलावत, 9815099507, 8527257825
- हिसार, फरवरी 1987 / 5'3'', एमडीएस, पिता रिटा. सरकारी आफिसर, माता गृहिणी, बहन बीटेक–कार्यरत टीसीएस, गोत्र–चहल, ढांडा, राढ, 9911335474
- चरखी दादरी–हरियाणा, 34 / 5'7'', बीए, बीएड, एमफिल, पीएचडी (ईको), असि. प्रोफेसर (गेस्ट–यूनिवर्सिटी), पिता रिटा. आफिस सुपरिटेंडेंट (पब्लिक हेल्थ), माता रिटा. टीचर, वरीयता– समकक्ष शिक्षित / कार्यरत, गोत्र– सांगवान, श्योराण, ठोलिया, 8053066387
- हरियाणा, 1993 / 5'4'', बीटेक, साटवेयर इंजीनियर–विप्रो दिल्ली, गोरी, पिता रिटा. सरकारी अधिकारी, माता वाइस प्रिंसीपल, बहन–बहनोई एमडी डाक्टर, वरीयता– एमएनसी / सरकारी नौकरी / बैंकिंग, गोत्र– छिकारा, तोमर, दलाल, 9896250499
- हरियाणा, 28 / 5'5'', एमएससी (फुड टेक्नोलोजी) नेट पास, बीएड पास, पीएचडी शिक्षारत, एनडीआरआई–करनाल, माता–पिता, एक भाई, एक बहन, वरीयता– क्लास 1 व 2 आफिसर, गोत्र–सांगवान, जाखड़, अहलावत, 9416055527
- सोनीपत, अगस्त 1991 / 5'4'', बीएड–इंगलिष ऑनर्स, एमए, बीएड–डीयू, अंग्रेजी टीचर–जैन भारती पब्लिक स्कूल (3 लाख वार्षिक), माता–पिता, बहन, भाई, दादी, वरीयता–सरकारी नौकरी / बिजनेस / कार्यरत, गोत्र– खत्री, राणा, गुलिया, 9711135071
- रोहतक, 27 / 5'2'', बीएससी आनर्स (बायोटेक, गोल्ड मेडलिस्ट), एमएससी (बायोटेक), नेट, गेट, डीबीटी, एचटेट, पीएचडी– फाईनल ईयर, गोत्र– मान, मलिक, बेनीवाल, 9068949430, 9811205415
- पानीपत, 27 / 5'8'', एमए (अंग्रेजी), प्रीपेरिंग नेट, आई.बी. कालेज पानीपत में कार्यरत, पिता रिटा. माता गृहिणी, भाई साटवेयर इंजीनियर (एमएनसी), वरीयता– नौकरी / बिजनेस, गोत्र– दलाल, जागलान, गुलिया, 9896474774
- सोनीपत, 24 / 5'4'', एमएससी, कार्यरत–प्राईवेट स्कूल बहादुरगढ़ (2 लाख वार्षिक), पिता टीचर–प्राईवेट, माता गृहिणी, भाई कार्यरत–प्राईवेट कंपनी, वरीयता– पीआरओ / इंजीनियर / सरकारी नौकरी / कारपोरेट सेक्टर नौकरी, गोत्र– मलिक, अंतिल, खत्री, 8950407268

हमें जिन पर गर्व है

दिनांक 22.02.2017 को हरकोबैंक कर्मचारी युनियन की आमसभा की बैठक में श्री रणधीर सिंह जागलान को सर्वसम्मति से हरकाबैंक कर्मचारी युनियन का प्रधान चुना गया तथा उन्हें अपनी नई कार्यकारिणी गठित करने के लिये पूर्ण अधिकार दिए गए, जिनमें श्रीमती संगीत कालडा, उप–प्रधान, श्री बिशम्बर दयाल को महा–सचिव व श्री प्रेम सिंह ज्याणी कैशियर, श्री भूपसिंह को सचिव श्री नंद लाल जामवाल व श्री रविन्द्र कुमार को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया। इस अवसर पर श्री रणधीर सिंह जागलान ने प्रधान चुने जाने पर अपने साथियों का धन्यवाद किया।

जाट सभा चण्डीगढ़ / पंचकूला इनकी शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

गलतियों से घबराये नहीं – वे जीवन का अभिन्न भाग हैं

– जेसिका मर्टिन

(जिंदगी फूलों की सेज नहीं है जो भी दुनिया में आया है, उसे किसी न किसी मोड़ पर कम या अधिक कड़वी सच्चाईयों का सामना करना ही पड़ता है। और तब जरूरत होती है खुद को बेखौफ और साहसी बनाने की, ताकि मुश्किलों का डटकर सामना किया जा सके। लेखिका एक स्वतंत्र कोच हैं। वह प्रोफेशनल्स को साहसी बनने की प्रेरणा देती हैं। उनका यह लेख पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगा।)

गलतियों से घबरायें नहीं। हेलन केलर का यह कथन एक प्रेरणा है, जिससे इंसान अपनी जिंदगी में बदलाव ला सकता है। अगर हम एक बार अपनी मौजूदा स्थिति को बदलने की ठान लें तो फिर रास्ते में आने वाली बाधाएं भी डराना छोड़ देती हैं। एक–एक जोखिम को पार करते हुए बढ़ने के साथ वह विश्वास भी मजबूत होने लगता है कि सही दिशा में प्रयास करने से बड़ी से बड़ी मुश्किलों से पार पाया जा सकता है।

शुरूआत करने के साहस से ही ख्याति प्राप्त होती है। अमेरिकी विद्वान यूजीन फिचवेयर का कथन सही मायनों में साहस के महत्व को दर्शाता है। प्रसिद्ध किताब 'इ इंडियन वॉर ऑफ 1864' के लेखक यूजीन फिचवेयर का मानना है कि आपकी प्रशंसा उसी क्षण शुरू हो जाती है, जब आप कोई शुरूआत करने का साहस करते हैं। ऐसे किसी भी क्षण में जब हम सामान्य से हटकर कुछ बड़ा करने की सोचते हैं तो साहस का होना जरूरी हो जाता है।

जीवन का सबसे बड़ा जोखिम है,
जोखिम उठाने का साहस न करना।

बहुचर्चित शो की होस्ट और समाज सेविका ऑपरा विन्फ्रे का मानना है कि हम सभी के जीवन में साहस का बड़ा महत्व है। उनकी ऊपर कही इस बात पर विचार करने से समझ में आता है कि जोखिम उठाने के साहस से ही लोग अपनी इच्छाओं को पूरा करते हैं। अगर आप जोखिम उठाने से बचते हैं तो मनमुताबिक सफलता भी हासिल नहीं होगी। अगर कुछ पाना है तो जोखिम उठाने का साहस करना ही होगा।

किसी से भी हो सकती हैं गलतियां :–

यहां जिंदगी की वास्तविकताओं को सही और सकारात्मक ढंग से देखने की जरूरत है। यही तरीका है, जिससे आप बड़ी समस्याओं पर बेहतर ध्यान दे पाएंगे। उन कामों में अधिक सक्रिय रहते हुए उनके समाधान की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। पर साथ ही हर कदम पर यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि आप मनुष्य हैं और आपसे भी गलतियां हो सकती हैं। अतः अपनी गलतियों को मुस्कराकर स्वीकारते हुए उनसे सबक लें। कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है...

शब्दों से अधिक काम बोलता है :–

कहा जाता है कि सफलता हासिल करने वाले लोग बोलने से अधिक काम करने में विश्वास रखते हैं। अगर आप भी काम करने में यकीन रखने वाले व्यक्ति हैं तो अपने कामों की एक निश्चित योजना बनाने पर जोर दें। इससे रास्ते में आने वाली बाधाओं का सामना करने में मदद मिलेगी। जो बातें जीवन को बड़े स्तर पर प्रभावित करती हैं, उनके बारे में प्रमुखता से सोचें और उन पर काम करने के लिए तैयार रहें।

गलतियां आपको बेहतर बनाती हैं :–

वास्तव में गलतियां इंसान को बेहतर बनाने का जरिया होता है। हर व्यक्ति पर अपनी गलतियों का प्रभाव पड़ता है और वह हर व्यक्ति पर अलग–अलग होता है। मायने यह रखता है कि हम अपनी गलतियों को किस रूप में लेते हैं। गलतियां लोगों को अपनी योजना व काम के तरीके में सही–सही बदलाव करने का मौका देती हैं और सफलता के नजदीक ले जाने के साथ हमें बेहतर इंसान भी बनाती हैं।

प्रत्येक गलती आपकी प्रगति है :–

यह बात काफी महत्वपूर्ण है। हर वह मनुष्य, जो अपनी गलतियों से सीखता है, वह उन्नति की राह पर है। अतः अपनी गलतियों की चिंता छोड़कर उनसे सबक लें और आगे बढ़ें।

गलतियों को दोहरएं नहीं :–

इस बात को ध्यान से समझने की आवश्यकता है। जब हम यह कहते हैं कि हर गलती सीखने का मौका देती है, तो उसके साथ यह भी ध्यान में रखना होगा कि एक ही गलती को बार–बार दोहराया न जाये। अतः गलतियों को आदत न बनाएं, नही ंतो वे आपकी उन्नति में बाधा साबित होंगी।

उपर्युक्त स्थिति दो आयामों को मजबूत रिश्ते को दर्शाती है, एक है साहस और दूसरा है गलतियों से निडरता। कह सकते हैं कि साहसिक व्यक्ति गलतियां करता है, पर उनसे हारता नहीं है। वह एक गलती को बार–बार नहीं करता और अंत में उसे प्रसिद्धि मिलती है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि विलक्षण व्यक्ति साहसिक होते हैं और कुछ अलग करने की धुन में गलतियां करने से नहीं घबराते। जबकि आम इंसान हारने के डर से कुछ नहीं कर पाते और जीवन में उस सफलता तक नहीं पहुंच पाते, जिसके वह हकदार हैं।

और अंत में साहसिक व्यक्ति गलतियों को जीवन का हिस्सा मानते हैं और उनसे सीख लेने की कोशिश करते हैं। इस तरह वे अपने को अलग स्तर पर ले जाते हैं। तो चिंता छोड़ें और साहसिक बनें, जिंदगी आपके लिए रूकेगी नहीं।

(हिन्दुस्तान से साभार)

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।